ISSN 2319-8419

Published by

ज्ञान महाविद्यालय
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।।
रघु परिसर
अलीगढ़

Bi-Annual and Bi-Lingual International Journal

Vol. 14 ISSUE- 21 AUGUST, 2025

GYAN BHAV

Journal of Teacher Education

(Peer Reviewed)

In Collaboration With U.P. Self Finance Colleges' Association

GYAN BHAV JOURNAL OF TEACHER EDUCATION

EDITOR IN CHIEF

Smt. Megha Arora
Department of Teacher Education
Gyan Mahavidyalaya, Agra Road,
Aligarh (U.P)-202002
Mob. No.- . 9837751300

ADVISORY COMMITTEE

Prof. Harcharan Lal Sharma
Curriculum Specialist (Moscow)
(Ex-NCERT, NIOS – GOI)
Consultant & Co-ordinator,
School Education Think Tank,
Surya Foundation, New Delhi
Mob.No. - 9811687565

Prof. Gunjan Dubey
Teacher Education Department
A.M.U Aligarh
Mob. No.- 9412459713

Dr.Jai Prakash Singh
(Ex. Professor)
Department of Teacher Education
D.S. (PG) College, Aligarh (U.P.)
Mob. No.- 9410210482

Prof. (Dr.) Punita Govil
Department of Education
A.M.U. Aligarh
Mob. No.- 9837146021

Editorial Board

Mr. Girraj Kishore
Mob. No. 9058382553

Dr. Beena Agrawal
Mob.No. 7017568337

Dr. Ratna Prakash
Mob.No. 7247875053

EDITORIAL SECRETARY

Mr. Jay Prakash Sharma
Mob.No. 8533803101

Gyan Bhav : Journal of Teacher Education is an Bi Annual and bi-lingual periodical published every year in February and August by Gyan Mahavidyalaya, Aligarh. Department of Teacher Education of Gyan Mahavidyalaya is accredited **'A' Grade with CGPA 3.16 by National Assessment and Accreditation Council (NAAC) on 5th July, 2012.**

The Journal aims to provide teachers, teacher-educators, educationists, administrators and researchers a forum to present their work to community through original and critical thinking in education.

Manuscripts sent in for publication should be inclusive to Gyan Bhav Journal of Teacher Education. These, along with the abstract, should be in duplicate, typed double-spaced on one side of the sheet only, addressed to the Editor in Chief, Gyan Bhav Journal of Teacher Education, Dept. of Teacher Education, Gyan Mahavidyalaya, Agra Road, Aligarh – 202002

Computer soft copy can be sent by E-mail: **publicationgyan@gmail.com**

Copyright of the articles/research papers published in the journal will rest with Gyan Mahavidyalaya and no matter may be reproduced in any form without the prior permission of Gyan Mahavidyalaya. The content of matter are the views of the authors only.

Correspondence related to publication, permission and any other matter should be addressed to the Editor-In-Chief. Our Website: - **http://gyanmahavidhyalaya.com/Journals.aspx**

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

CONTENTS

S. No.	TITLE	AUTHOR'S NAME	Page No.
1.	महाकुंभ का आध्यात्मिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण : महाकुम्भ 2025 के विशेष सन्दर्भ में	आकांक्षा मिश्रा शेखर सिंह (असि.प्रो.)	1-5
2.	The Role of ITEP in Promoting Social Responsibility Among Pre-Service Teachers	Imran Hossain Dr. Sanjay Singh Yadav	6-13
3.	Impact of Project Based Learning on Academic Achievement of Students	Dr Syed Murtaza Fazl Ali	14-19
4.	उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन	दीप्ति गुप्ता प्रो0 स्वीटी श्रीवास्तव नमन गुप्ता	20-26
5.	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ''कला समावेशी शिक्षण में शिक्षकों की सक्रिय भूमिका और चुनौतियाँ तथा समाधानः एक अध्ययन	रेनू तोमर	27-38
6.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता	डॉ0 पुष्पेन्द्र सिंह	39-44
7.	Embedding Value Education in India's Educational Framework: A Critical Analysis of NEP 2020 Reforms	Shikha Verma Dr. Reena Agarwal	45-49
8.	उपनिषदों में वर्णित शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता	श्रीमती मेघा अरोरा आचार्य जयप्रकाश शर्मा	50-57

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

महाकुंभ का आध्यात्मिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण : महाकुम्भ 2025 के विशेष सन्दर्भ में

*आकांक्षा मिश्रा
**शेखर सिंह (असि.प्रो.)

शोध सार

भारतवर्ष में वैसे तो अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक आयोजन होते हैं, परंतु कुम्भ मेले का अपना अलग ही महत्त्व है। कुम्भ मेले का आयोजन हर 4 वर्ष में 4 अलग–अलग जगहों पर (उज्जैन, नासिक, प्रयागराज, हरिद्वार) में होता है। माना जाता है कि कुम्भ मेले का आयोजन समुद्र मंथन के दौरान उपर्युक्त वर्णित 4 जगहों पर अमृत की बूँद गिरने के कारण होता है। प्रयाग में लगने वाले महाकुंभ 2025 का इसलिए भी अत्यधिक महत्त्व था, क्योंकि इस वर्ष 144 वर्षों बाद वैसा ही संयोग बन रहा था, जैसा संयोग समुद्र मंथन के दौरान था। इस शोध पत्र में महाकुंभ का आध्यात्मिक एवं शैक्षिक प्रभाव लोगों में महाकुंभ को लेकर आस्था के द्वारा देखा गया है। इस महाकुंभ के दौरान बिना किसी निमंत्रण के देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के माध्यम से सामाजिक व पारस्परिक सौहार्द की जो झलक देखी गई वह शायद ही पृथ्वी पर कहीं और संभव हो। अतः इस शोध पत्र में देखा गया कि आधुनिक जीवन की माँगों से भरी दुनिया में, महाकुंभ मेला एकजुटता, पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक के रूप में किस तरह से सामने आया और उसका आध्यात्मिक तथा शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द– महाकुंभ, समुद्र मंथन, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पारस्परिक सौहार्द, आध्यात्मिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक प्रभाव

प्रस्तावना :–

''प्रयागराज में हुए महाकुंभ का केवल धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही विशेष महत्त्व नहीं था, अपितु यह आध्यात्मिक व शैक्षिक दृष्टिकोण को भी एक नयी उड़ान देने वाला था। इस महाकुंभ में विज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म का अद्भुत संगम दिखाई दिया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने महाकुंभ 2025 को भारत की विविधता में एकता का गौरवशाली प्रतीक बताया। उन्होंने सनातन संस्कृति और परंपराओं की अभिव्यक्ति के रूप में इसकी वैश्विक प्रतिष्ठा का वर्णन किया।''[1] यह आध्यात्मिक एकता, सांस्कृतिक विरासत और मानवीय संबंधों के सार को मूर्त रूप देने वाला था, जिससे यह उन सभी के लिए वास्तव में एक परिवर्तनकारी अनुभव बना, जिन्होंने इसके दिव्य आलिंगन में भाग लिया। पारम्परिक परंपराओं के अस्तित्व से अनुकूलन करता महाकुंभ समय के साथ आधुनिकता की ओर बढ़ता दिखाई दिया। ''यूनेस्को द्वारा 2017 में कुम्भ मेले को मानव जाति की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दिए जाने के बाद से यह आयोजन विश्व के लोगों के लिए और आकर्षण का केन्द्र बन गया।''[2] कुम्भ उनके लिए सदैव शोध एवं जिज्ञासा का विषय रहता है, जो यह जानना चाहते हैं कि कैसे बिना निमंत्रण के ही इतने अधिक लोग एक साथ एक जगह एकत्रित हो जाते हैं।'इसके साथ ही महाकुंभ के आर्थिक दृष्टिकोण को अगर हम देखें तो विशेषज्ञों का मानना था कि इस बार के महाकुंभ से देश की जीडीपी में 0.3 डॉलर की वृद्धि होने के साथ ही अन्य दूरगामी आर्थिक प्रभाव होंगे, जो उत्तर प्रदेश की आर्थिकी को एक ट्रिलियन डॉलर वाले लक्ष्य के और निकट ले जाएँगे और यह लक्ष्य पूर्ण होता भी दीखा। महाकुंभ में आर्थिक प्रभाव से अधिक सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ, जो हमें वसुधैव कुटुंबकम् की मूल भावना के और अधिक निकट ले गया।''[3] यह महाकुंभ सिर्फ संस्कृतियों का ही मिलन नहीं था, बल्कि यहाँ वैदिक और आधुनिक गणित की दो धाराओं का भी संगम दीखा।प्रयागराज निवासी पवन श्रीवास्तव ने दो साल शोध अध्ययन और परिश्रम से **'प्रमुद घटिका'** नाम से एक घड़ी बनाई।

***एम.ए.–राजनीति विज्ञान, शिक्षा शास्त्र, नेट (शिक्षा शास्त्र),** Mob.No. 9696802286 Email – mishraakanksha069@gmail.com
****असि0प्रो0 (राजनीति विज्ञान) दीन दयाल उपाध्याय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीतापुर,** Mob.No. 8858904118 Email – shekharsingh212@gmail.com

यह एक ऐसी घड़ी है, जो पौराणिक मापक इकाई प्रहर, मुहूर्त और घटी के साथ ही सेकेंड, मिनट और घंटा भी बता रही है। इस घड़ी से, किस काल में कौन से देव का अंश प्रधान रहे तथा उस समय कौन सा शुभ मुहूर्त होगा, यह भी पता चलेगा। ज्योतिषियों का मानना है कि यह घड़ी वेदों से लेकर आधुनिक काल के कालशास्त्र का सूक्ष्म विवेचन कर पाने में सक्षम होगी।''(4)'' अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक कर्मों से परे, यह तीर्थयात्रियों को आंतरिक विचारों में संलग्न होने और पवित्रता के साथ अपने संबंध को गहरा करने का अवसर देने वाला था। आधुनिक जीवन की माँगों से भरी दुनिया में, महाकुंभ मेला एकजुटता, पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक के रूप में सामने आया।

अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्त्व

उद्देश्य –प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महाकुम्भ के दौरान लोगों में उमड़ी आस्था, आपसी सौहार्द्र व संस्कृति के अनूठे सामंजस्य का आध्यात्मिक व शैक्षिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है।

महत्त्व –

1. यह आयोजन एक केन्द्रीय आध्यात्म की भूमिका के रूप में खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्म, आनुष्ठानिक परम्पराओं और प्रथाओं के विज्ञान तथा सांस्कृतिक रीति रिवाजों को अपने अन्दर समाहित करता है।
2. इसमें विभिन्न सामाजिक, गतिविधियों का जो समागम दिखाई दिया, ऐसा विविधता में एकता भरे अनूठे समागम का दृश्य शायद ही कहीं सम्भव हो।
3. महाकुम्भ या ऐसे अन्य आयोजन हमें प्रत्यक्ष रूप से ऐसे अनुभवों से परिचित कराते हैं, जिनका ज्ञान हम शैक्षिक वातावरण में बँधकर प्राप्त नहीं कर सकते।
4. लगभग 65 करोड़ स्नानार्थियों में जाति, परिवेश, क्षेत्र का कोई भी भेद नहीं था। सबके लिए एक ही प्रकार के घाट तथा एक ही प्रकार के खान–पान की व्यवस्था थी।
5. 45 दिन तक चले इस महाकुम्भ में एकता का एक जीवंत उदाहरण सुरक्षा बलों की तैनाती में भी दिखाई दिया। कई हजार की संख्या में तैनात सुरक्षा बलों में जातियों का कोई भी भेद नहीं था, जो कुम्भ के अनेकता में एकता के दर्शन को स्थापित करने वाला था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

कुंभ मेला दो शब्दों ''कुंभ'' और ''मेला'' से बना है। कुंभ का अर्थ है – अमृत से भरा हुआ कलश, मेला का अर्थ है, सभा या मिलन, जिसमें श्रद्धालु बड़ी संख्या में जुटते हैं। सैकड़ों वर्षों से लगता आ रहा ये मेला भारतीय संस्कृति में आस्था का प्रतीक बन चुका है। ''कुभ मेले का आरंभ कब हुआ, इसका सटीक प्रमाण तो नहीं है, लेकिन इस महोत्सव का सबसे प्राचीन वर्णन सातवीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के काल का मिलता है, जिसका उल्लेख चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग ने किया है। ह्वेनसांग ने अपने यात्रा विवरण में प्रयागराज के इस महोत्सव का उल्लेख किया है, जिसमें उन्होंने संगम पर स्नान का उल्लेख कर इसे पवित्र हिंदू तीर्थस्थल कहा है। गरुड़ और अमृत कलश की कथा महाकुंभ मेले की पहली कथा ऋषि कश्यप और उनकी पत्नियों कद्रु और विनता से जुड़ी है। कद्रु ने 1000 नाग पुत्रों को जन्म दिया और विनता के दो पुत्र हुए, जिनमें से एक गरुड़ थे।गरुड़ ने अपनी माँ विनता को कद्रु के नाग पुत्रों की दासता से मुक्त कराने के लिए अमृत कलश बैकुंठ से लाने का संकल्प लिया। विष्णु भगवान की अनुमति से गरुड़ अमृत कलश को लाया, लेकिन इन्द्र ने अपनी शक्ति से उसे नागों तक पहुँचने नहीं दिया।इस दौरान इन्द्र द्वारा गरुड़ पर चार बार आक्रमण किया गया, जिससे अमृत की बूँदें हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक चार स्थानों पर गिरीं, जिससे इन स्थानों पर कुंभ पर्व का आयोजन आरंभ हुआ।''[5] देव असुर संग्राम के बाद अमृत घट अर्थात् कुम्भ लेकर गरुड़ उड़ा तो कई स्थानों पर उसे धरती पर

उतरना पड़ा था। घट को लेकर जब–जब गरुड़ पंख फैलाकर फिर से उड़ता, तो कुम्भ से अमृत की कुछ बूँदे छलककर पृथ्वी पर गिर पड़तीं। जहाँ–जहाँ ये बूँदें गिरीं वहीं–वहीं यह कुम्भ आयोजित होता है।''[6]

आध्यात्मिक एवं शैक्षिक विश्लेषण –

कुंभ मेला पृथ्वी पर विश्व का सबसे बड़ा मेला है। यह तीर्थ यात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है। प्रयागराज को 'तीर्थ राज' कहा गया है। यह हिन्दू आस्था का एक महान केन्द्र तो है ही, यह हमारे देश की धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बिन्दु भी है।''[7] ग्रह राशियों के ऐसे योग–संयोग जो हमारी प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिकता को जीवंत बनाये रखते हैं। इस बार ऐसे ही योग–संयोग उत्पन्न होने से, जो समुद्र मंथन के समय थे, 144 वर्षों बाद तीर्थराज प्रयाग में लगने वाले महाकुंभ को अत्यधिक महत्त्व बढ़ाते हैं। ज्योतिष गणना के क्रम में कुम्भ का आयोजन चार प्रकार से माना गया हैः –

बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा–तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में शिप्रा तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।''[8]

धार्मिकता एवं ग्रह–दशा के साथ–साथ कुम्भ पर्व को तत्त्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुम्भ की उपयोगिता सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। ''प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति–आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है "यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" अर्थात् जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इसलिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले, इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों–अभिमतों–मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है–'कुम्भ' और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान–अमृत ही कुम्भ–पर्व का प्रसाद हैं।''[9] सन् 2025 के महाकुंभ में माघ मासारंभ संग सूर्यदेव के मकर राशि में प्रवेश करते ही तीर्थराज प्रयाग में पुनः त्रिवेणी तट पर तुलसी बाबा की यह चौपाई जीवंत हो उठी -

गंग–जमून की निर्मल जलधार, भावों में अदृश्य सरस्वती एकाकार और उसके समानांतर अथाह जनाधार।

विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समागम 'महाकुंभ का प्रारम्भ 13 जनवरी, 2025 से प्रयागराज में हुआ। यह एक ऐसा आयोजन था, जहाँ करोड़ों लोगों की आस्था, विविध संस्कृतियों की झलक और 'लघु भारत' का दर्शन हुआ। महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं था, अपितु यह आध्यात्म, संस्कृति और अर्थव्यवस्था का भी अनूठा संगम था, जो बहुआयामी विश्लेषण और गहन चर्चा का विषय बना। इसे धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह पूजा–पद्धतियों, अखाड़ों, नागा साधुओं और विभिन्न पंथों का एक अनोखा केन्द्र बिंदु था। हालाँकि, महाकुंभ का महत्त्व केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दायरे तक सीमित नहीं था। इस आयोजन ने भारत के प्राचीन धार्मिक अर्थशास्त्र, 'टेम्पल इकोनॉमी' का सशक्त उदाहरण पेश किया। टैम्पल इकॉनामी यह बताती है कि किस प्रकार धर्म और अर्थव्यवस्था एक–दूसरे के पूरक होते हैं और कैसे धार्मिक आयोजन आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हैं।''[10]

प्रयाग में कुम्भ–

''प्रयाग में अमृत छलकने का समय वह था, जब सूर्य ने मकर राशि में (मकर–संक्रान्ति) तथा बृहस्पति ने वृष–राशि में प्रवेश किया था। उस समय की एक अन्य गणना के अनुसार सूर्य एवं चन्द्र के मकर राशि

तथा बृहस्पति के वृष–राशि में प्रवेश करने पर, माघ मास में अमावस्या को प्रयाग में कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। यहाँ के कुम्भ को मकरस्थ कुम्भ भी कहा जाता है।

गंगा–यमुना एवं सरस्वती के संगम पर विराजित प्रयाग सभ्यता के ऊषाकाल से ही भारतीय संस्कृति का अमर वाहक और आधार स्तम्भ रहा है। यह हमारे राष्ट्र तथा संस्कृति की पहचान, प्रतीक व पुरातन परम्परा का निर्वाहक रहा है। ''प्रयागराज को शास्त्रों में 'तीर्थराज' की उपाधि से अलंकृत किया गया है। यह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता व मूल्यों का संरक्षक, संवर्धक व पोषक रहा है। यही कारण है कि पुरातन काल से लेकर अद्यावधि तक यह साहित्यिक मनीषियों के लिये भी श्रद्धा एवं आस्था का केन्द्र होने के साथ–साथ उनका प्रमुख विवेच्य भी रहा है। अतः वैदिक वाङ्मय से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्यपर्यन्त इस पुण्य और पवित्र क्षेत्र की चर्चा एवं प्रशस्तिगायन स्वाभाविक ही है।सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग इन चारों युगों में अक्षय पुण्य रखने वाली इस धरती को 'अक्षय क्षेत्र' के नाम से जाना जाता रहा है। भारतीय संस्कृति के प्राण, वेदों में भी इसकी महिमा निहित है। ऋग्वेद खिल 10165 में संगम का प्रथमतः उल्लेख मिलता है।

अग्नि कोण मुखी प्रायात्सरिद्धिः सङ्तापगा । प्रयागदेशमागत्य सार्ध यमुनया शिवा ।। 5।।
सरस्वत्या च समिश्रा समभूमुनिपुङ्वा । तत्र भागीरथी पुण्या देवानामयि दुर्लभा ।।6।। ''[11]''

''सितासिते सरिते यत्र सङ्गते तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति, ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते।(जहाँ पर सित–असित (गंगा–यमुना) नदियाँ आपस में मिलती है, वहाँ (दोनों के संगम में) स्नान करने वाले परम पद को प्राप्त कर सांसारिक बंधन से मुक्त हो जाते हैं।''[12]''

यहाँ धर्म एवं संस्कृति का अनूठा इतिहास छिपा है। यह राजनैतिक इतिहास का भी जीता–जागता केन्द्र रहा है। पौरव वंश के जनक पुरु की राजधानी प्रतिष्ठानपुर आज भी ध्वंसावशेष के रूप में हमारे सामने है। दुष्यन्त, शकुन्तला, भरत की कहानी कहने वाले इस प्रतिष्ठानपुर में इतिहास का अक्षय भण्डार छिपा है। हंस तीर्थ, समुद्र कूप, वेद व्यास पाठशाला सरीखे जाने कितने ऐतिहासिक तथ्य झूसी के खण्डहरों में समाये हुये हैं। एक ओर अलर्कपुरी (अरैल), दूसरी ओर प्रतिष्ठानपुर के खण्डहर इस उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वन–गमन, श्रृंगी ऋषि की तपोभूमि श्रृंगवेरपुर के समीप केवट का अटूट प्रेम, भरद्वाज आश्रम एवं चित्रकूट गमन की जीवन्त कहानी का वर्णन महर्षि वाल्मीकि तथा गोस्वामी तुलसीदास ने जिन शब्दों में किया है, उसे पढ़कर प्रयाग का अनन्त वैभव मन को झकझोर देता है। ''महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' में संगम का जीता जागता चित्रण किया है। आदि शंकराचार्य की दिग्विजय यात्रा का केन्द्र बिन्दु प्रयाग ही रहा है। यह भारत की आध्यत्मिक और सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र स्रोत है।''[13]''

निष्कर्ष –

आज भारत को छोड़ अनेक देशों में भी सनातन के अनुयायी हैं, जिन्होंने त्रिवेणी संगम पर आकर स्नान किया और जो नहीं आ पाये उन्होंने ने भी मीडिया के द्वारा इसे देखा। लेकिन इस तरह के युटयुबर्स, सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर भी दिखे, जिन्होंने अपने फायदे के लिए या अज्ञानतावश हमारी संस्कृति का दुष्प्रचार भी किया। आज के समय में प्रचार तंत्र जरूरी है, लेकिन यह भी ध्यान देना होगा कि प्रचार किन विषयों का हो। प्रचार हो सनातन ज्ञान का, प्रचार हो सनातन में रची बसी सामाजिक समरसता के भाव का। आज संपूर्ण विश्व की निगाह हम पर है और यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम हमारी सनातन संस्कृति और देश की छवि पर किसी भी तरह का नकारात्मक प्रभाव न पड़ने दें। हम विश्व को सामाजिक समरसता का, जप तप, ध्यान तथा अध्यात्म का संदेश दें, जो इस महाकुंभ का मूल उद्देश्य था।

विवेचना

प्रयाग भारत का प्राण है। महाकुम्भ 2025 के सिंहस्थ कुंभ में सरकार द्वारा अपेक्षित 45 करोड़ लोगों के स्नान से भी ज्यादा लगभग 65 करोड लोगों ने स्नान का पुण्य अर्जित किया। यह इस बात का प्रमाण है कि आज भी लोगों में हमारी प्राचीन संस्कृति एवं आध्यात्म को लेकर बहुत गहरी आस्था है इसलिए आध्यात्मिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण के साथ ही पौराणिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व तकनीकी दृष्टि से भी यह महाकुंभ आज भी अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखने के साथ ही वर्तमान पीढ़ी के लिए भी भविष्य का मार्ग प्रदर्शित करने वाला था। अतः आध्यात्मिक तथा शैक्षिक दृष्टिकोण से इसका महत्त्व बहुत अधिक था, जिससे सामाजिक सौहार्द और पारस्परिक संबंधों का एक अनुपम उदाहरण इस महाकुम्भ ने प्रस्तुत किया।

संदर्भ

1. मिश्रा, श्याम (2025 जनवरी 11), सनातन का वैभव, शौर्य और संस्कार देखना है तो आइये 'प्रयाग / *दैनिक जागरण,*पृष्ठ सं0, 13
2. यादव, प्रमोद (2025, जनवरी 15) / त्रिवेणी में घुला अमृत, *दैनिक जागरण,*पृष्ठ सं0, 1
3. https://ich-unesco-org.translate.goog/en/RL/kumbh-mela-01258?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tcretrieved 25 जनवरी 2025
4. शुक्ल, संतोष (2025, जनवरी 18), महाकुंभ में शाश्वत काल––सनातन गणना––आधुनिक संगम, *दैनिक जागरण,*पृष्ठ सं0, 10
5. सरकार, उत्तर प्रदेश (त्रिवेणी से सबको संदेश– एकता से अखण्ड रहेगा देश) (2025,जनवरी 24) / सनातन गर्व, पर्वराज महाकुंभ, *अमर उजाला(रूपायन),* पृष्ठ सं0, 08
6. शास्त्री, बालकृष्ण, ''कुम्भ मंथन का महापर्व'' , प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. कुमार, निर्मलेन्दु, ''प्रयागराज और कुम्भ , सांस्कृतिक वैभव की अभिवन गाथा'', प्रकाशक लोक भारती 24 अक्टूबर, 2019
8. यादव, प्रमोद (2025, जनवरी 15), त्रिवेणी में घुला अमृत, *दैनिक जागरण,*पृष्ठ सं0, 11
9. जयसवाल, प. ज. (2024, दिसम्बर 18). महाकुंभ का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और आर्थिक महत्व, साथ ही इसकी सामाजिक समरसता / Panchjanya. retrieved 02 फरवरी 2025 https://panchjanya.com/2024/12/18/377009/analysis/spiritual-scientific-importance-of-maha-kumbh/
10. Nirmala, V. (2025, जनवरी 22) / महाकुंभ 2025: आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक समृद्धि की त्रिवेणी,VisionViksitBharat. https://visionviksitbharat.com/mahakumbh-2025-the-confluence-of-spiritual-social-and-economic-prosperity/retrieved 12 फरवरी 2025
11. देवी भागवत पुराण–अध्याय 70 श्लोक : 5, 6 (प्रयाग की महत्ता)
12. जायसवाल, प. ज. (2024, दिसम्बर 18). महाकुंभ का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और आर्थिक महत्व, साथ ही इसकी सामाजिक समरसता / Panchjanya. https://panchjanya.com/2024/12/18/377009/analysis/spiritual-scientific-importance-of-maha-kumbh/
13. Dubey, R. (2025, जनवरी 25). महाकुंभ 2025: महाकुंभ में आस्था के बजाय रीलों की डुबकी, सनातन संस्कृति की अद्वितीय शक्ति पर सवाल – मनीषा शर्मा, Dip of reels instead of faith in Mahakumbh, questions on the unique power of Sanatan culture - Manisha Sharma. Swadesh : Read Latest Hindi News (हिन्दी समाचार) Breaking News, Sports, Bollywood, Economy. https://www.swadeshnews.in/mahakumbh-2025/dip-of-reels-instead-of-faith-in-mahakumbh-questions-on-the-unique-power-of-sanatan-culture-manisha-sharma-939661retrieved 20 फरवरी 2025 https://www.nayaindia.com/india/uttar-pradesh/mahakumbh-2025-amazing-saga-of-history-mystery-and-tradition-this-opportunity-came-after-144-years-487745.html?ampretrieved 17 फरवरी 2025

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

The Role of ITEP in Promoting Social Responsibility Among Pre-Service Teachers

*Imran Hossain,
**Dr. Sanjay Singh Yadav

ABSTRACT

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP), introduced under the National Education Policy (NEP) 2020, aims to revolutionize teacher education in India by fostering educators who are not only skilled in pedagogy but also committed to addressing societal challenges. This conceptual paper explores how ITEP aligns with NEP 2020's vision of developing socially responsible educators. Through an analysis of the programme's curriculum, the study highlights its emphasis on promoting civic engagement, ethical reasoning, and social responsibility among pre-service teachers.This paper contributes to the discourse on teacher education reform by providing insights into ITEP's potential to shape educators as agents of change. It offers recommendations for enhancing the programme's alignment with NEP 2020 goals, ensuring a more equitable and inclusive education system.

Key Words: *ITEP, Social Responsibility, Pre-Service Teachers, NEP-2020*

Introduction

Teacher education in India has undergone a transformative journey, reflecting societal needs and aspirations across different historical periods. In the pre-independence era, teacher preparation was informal, with community elders or learned individuals passing on knowledge and teaching skills through mentorship. The colonial period saw the introduction of formal teacher training, largely influenced by the British education system, which focused on producing teachers as transmitters of rote knowledge rather than as facilitators of critical thinking.

We know that teaching is the respected and lovable profession in the globe. An increasing number of teachers in India is the latest, with 97 lakh teachers alone at the school level. According to World Bank research, the global teacher population now far exceeds 85 million, and another study of the UNESCO report, there has been a 50% rise in the global teacher population from 2000 to 2019 (Panda et al., 2024).

Post-independence, the government of India recognized education as a crucial tool for nation-building and prioritized teacher training as a central component of educational reform. Institutions such as the District Institutes of Education and Training (DIETs), Colleges of Teacher Education (CTEs), and Institutes of Advanced Studies in Education (IASEs) were established to provide professional training to teachers.With special focus on education, the Government of India established various educational committees and commissions to ensure the continuous development of the educational system, including the University Education Commission in 1948, the Mudaliar Commission in 1952, the Indian Education Commission (1964-66), the National Policy on Education (1968, 1986, and 1992), the Sarva Shiksha Abhiyan (SSA, 2000-2001), the Right to Education Act (2009), and the most recent, the National Education Policy 2020(Chakraborty, 2022),(Gupta, 2024).

* Junior Research Fellow, Department of Education, University of Lucknow, E.Mail.:-luphdimran@gmail.com, Mob.No. 8768741131

** Assistant Professor, Department of Education, University of Lucknow, Mob.No. 8090233290

In 2012, Justice J.S. Verma chaired the Verma Commission, which dealt with the qualitative aspect of secondary teacher development and identified gaps in the program(Mandal, 2024), and theNew Education Policy (NEP) 2020 marks a paradigm shift, emphasizing the need for interdisciplinary, value-based, and holistic teacher education. The introduction of the Integrated Teacher Education Programme (ITEP) is a key reform aimed at addressing the fragmented nature of traditional teacher training by combining academic knowledge and professional preparation into a single, coherent programme (NEP-2020).Now the focus gradually shifted from preparing teachers with basic instructional skills to equipping them with competencies for holistic education. Over time, themes such as inclusive education, critical pedagogy, and digital literacy became integral to teacher education programmes.

Importance of Social Responsibility in the Development of Educators

A teacher's social responsibility involves not just caring for their pupils, but also preparing them for their future roles in the community (Sihem, 2013).For evolving student-teacher development in the 21st-century, globally connected world, teacher training institutions should be responsible for designing programmes that help prospective teachers learn and understand a wide range of areas about teaching and learning, as well as their social and cultural contexts (Meenakshi, 2023). The concept of social responsibility emphasizes an individual's obligation to contribute positively to society. In the educational context, it refers to the ethical and civic duties of educators to address societal challenges, promote equity and justice, and inspire students to become active citizens. Teachers hold a unique position as role models, capable of shaping young minds and instilling values such as empathy, sustainability, and civic engagement.

In a varied country like India, where social inequalities, cultural pluralism, and environmental challenges coexist, the need for socially responsible educators is particularly significant. Socially responsible teachers:

- Promote inclusive classrooms, ensuring that learners from marginalized communities feel valued and supported.
- Encourage critical thinking to help students understand and address social issues.
- Advocate for environmental awareness and sustainable practices.
- Lead community engagement initiatives, fostering stronger connections between schools and society.

Brief Overview of the Integrated Teacher Education Programme (ITEP)

By embedding social responsibility into teacher education, programmes like ITEP aim to produce creative educators who are not only skilled in pedagogy but also deeply committed to societal transformation.

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) is an innovative, four-year undergraduate programme introduced as part of NEP 2020 to revamp teacher education in India. The policy aspires to provide high-quality education to all citizens of India, fostering a just and vibrant knowledge society (Khan, 2021).The National Council for Teacher Education has implemented ITEP at 57 teacher education institutes nationwide for the course of session 2023-24(Kumar, 2023).Unlike the traditional two-step process of completing a bachelor's degree followed by a Bachelor of Education

(B.Ed.), the four-year ITEP is an important achievement towards meeting one of the primary mandates of NEP 2020. Teacher educators are firstly responsible for fulfilling ITEP standards (Sharma, 2024).Furthermore, the ITEP training will help pupils strengthen their critical and logical thinking skills. As a practical component of education, it promotes holistic development among budding teachers (Gill, 2019). ITEP integrates these phases into a cohesive curriculum, allowing for a seamless blend of academic knowledge and professional training.Key features of ITEP include:

- **Multidisciplinary Education**: Courses from sciences, humanities, and education are combined to provide a broad-based understanding of knowledge and its applications.
- **Value-Based Learning**: Modules on ethics, civic responsibility, and Indian knowledge systems are designed to in still cultural rootedness and moral integrity.
- **Experiential Learning**: Practical training through internships, fieldwork, and community projects ensures that theoretical concepts are applied in real-world settings.
- **Global Competencies**: Emphasis on digital literacy, research skills, and innovative pedagogical techniques prepares educators for the demands of 21st-century classrooms.

Significance of the Study

This conceptual study holds substantial significance for multiple stakeholders in the field of education, particularly in the context of implementing the Integrated Teacher Education Programme (ITEP) under the National Education Policy (NEP) 2020. By analysing the ITEP curriculum's potential to foster civic engagement, ethical reasoning, along with social responsibility among pre-service teachers, the study contributes to the broader goals of creating socially conscious educators and an equitable education system.

Research Questions

To guide the exploration of ITEP's role in fostering social responsibility, the following research questions are proposed:

1. How does ITEP align with the broader goals of NEP 2020 in fostering socially responsible educators?
2. How does the ITEP curriculum promote civic engagement, ethical reasoning, and social responsibility among pre-service teachers?

Methodology

In this paper, the methodology focused on systematic exploration, analysis, and synthesis of existing theories, policies, and practices related to the Integrated Teacher Education Programme (ITEP) and its alignment with social responsibility goals. The approach is qualitative and non-empirical, relying on secondary data sources and theoretical frameworks.

Alignment of ITEP with Social Responsibility Goals in NEP 2020

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) introduced under the National Education Policy (NEP) 2020 is a forward-thinking reform in teacher education. Its design and objectives align strongly with NEP 2020's broader goals, particularly the fostering of socially responsible educators. ITEP will not only provide cutting-edge teaching as well as a solid basis in Early Childhood Care and Education

(ECCE), Foundational Literacy and Numeracy(FLN), inclusive education, and an awareness of Indian values and customs. It seeks to reinvent teacher education by developing multidisciplinary, value-driven teachers who are prepared to build New India's future with 21st-century global standards.(PIB Delhi, 2023)NEP 2020 emphasizes a holistic and multidisciplinary approach to education, aiming to develop individuals who are not only knowledgeable but also socially conscious, ethical, and capable of addressing the complex challenges of contemporary society.

Emphasis on Equity and Inclusion

NEP 2020 emphasizes the importance of addressing India's social and educational diversity by preparing teachers who can create inclusive learning environments and reduce disparities in access to education. The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) supports this vision by equipping pre-service teachers with inclusive education strategies, enabling them to meet the needs of students from marginalized, differently-abled, and socio-economically disadvantaged backgrounds. Additionally, through internships and community engagement projects in rural and underprivileged areas, ITEP provides hands-on experiences that help future educators understand ground-level challenges, develop empathy, and adopt a solution-oriented mindset essential for fostering equity in education.

Promotion of Ethical and Value-Based Education

NEP 2020 underscores the importance of instilling ethical values in both students and teachers, envisioning an education system rooted in moral development and civic responsibility. Aligning with this vision, the Integrated Teacher Education Programme (ITEP) incorporates dedicated modules on ethics and value education, which help pre-service teachers develop a strong sense of moral reasoning and social justice. These modules engage them with concepts like fairness, empathy, and civic duty. Furthermore, ITEP emphasizes the role of teachers as ethical role models, encouraging reflective practices, mentoring, and peer discussions that help future educators internalize and embody the values they are expected to impart to their students.

Focus on Sustainability and Environmental Awareness

NEP 2020 places a strong emphasis on sustainability and environmental responsibility as essential components of education. In alignment with this vision, the Integrated Teacher Education Programme (ITEP) incorporates environmental awareness into its curriculum through both theoretical and practical approaches. Pre-service teachers are introduced to concepts like ecological balance, conservation, and sustainable living, and are trained to integrate these themes into their classroom practices. Additionally, ITEP engages future educators in hands-on activities such as tree plantation drives, waste management initiatives, and community awareness campaigns, enabling them to experience and promote sustainable practices firsthand, both within schools and in the broader community.

Development of Critical Thinking and Problem-Solving Skills

NEP 2020 emphasizes the need to develop critical thinking and problem-solving skills among educators to address complex and evolving societal challenges. The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) supports this goal by promoting interdisciplinary learning, where subjects like humanities, sciences, and arts are integrated with pedagogy to help pre-service teachers view issues through multiple lenses. Additionally, the use of real-life case studies and action research projects

enables future teachers to identify problems, investigate underlying causes, and develop practical solutions, thereby strengthening their analytical and decision-making abilities.

Development of Scientific Temperament

The 1986 National Policy on Education (NPE) is a comprehensive program that emphasizes the development of scientific temper as a core value in education and said "*In our culturally plural society, education should foster universal and eternal values, oriented towards the unity and integration of our people. Such value education should help eliminate obscurantism, religious fanaticism, violence, superstition and fatalism.*" (Biswal & Pandey, 2022),along with in the word of NEP-2020,**Effective 21st-century higher education** should aim to develop well-rounded, thoughtful, and creative individuals. It must promote deep expertise in chosen fields while also fostering character, ethical values, curiosity, scientific temper, creativity, service spirit, and 21st-century skills across diverse disciplines like science, arts, humanities, languages, and vocational areas.

Integration of Indian Knowledge Systems and Cultural Heritage

NEP 2020 advocates for the integration of Indian Knowledge Systems (IKS) and cultural heritage into education to foster a sense of pride, identity, and rootedness among learners. The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) aligns with this vision by incorporating elements of Indian philosophy, art, literature, and cultural practices into its curriculum. This inclusion helps pre-service teachers understand the relevance of indigenous knowledge in contemporary education. Additionally, ITEP encourages active participation in cultural activities, festivals, and heritage-based projects, providing opportunities for cultural immersion. These experiences foster cultural sensitivity and deepen appreciation for India's rich and diverse traditions among future educators.

Practical Training for Real-World Challenges

NEP 2020 highlights the importance of experiential learning to assure that future educators can effectively translate theory based knowledge into practical action. The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) strongly supports this approach by incorporating hands-on training through school internships and community projects. During internships in diverse school settings, pre-service teachers gain valuable classroom experience, allowing them to apply pedagogical theories and address real-world teaching challenges. Additionally, community-based projects encourage them to engage with local issues such as literacy promotion and health awareness, thereby nurturing a problem-solving mindset and a strong sense of social responsibility.

Curriculum Analysis: Promoting Civic Engagement, Ethical Reasoning, and Social Responsibility in ITEP

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) curriculum is meticulously designed to prepare the ITEP trainees who are not only adept at teaching but also committed to addressing societal challenges. By integrating academic knowledge, practical training, and value-based education, ITEP promotes **civic engagement**, **ethical reasoning**, and **social responsibility** among pre-service teachers. These concepts are woven into the curriculum through various theoretical, practical, and experiential learning components.

Civic Engagement

Civic engagement in education involves preparing individuals to actively participate in democratic processes and contribute to societal well-being. For pre-service teachers, this means properly

understanding their role as change agents within their communities and instilling the same values in their pupils.

The ITEP actively promotes civic engagement by providing pre-service teachers with meaningful opportunities to connect with real-world social issues. Through service-learning modules, they connect with regional communities on projects related to literacy, health, environmental conservation, and more—such as organizing child rights awareness campaigns or conducting digital literacy workshops in underserved areas. Field visits and internships in diverse schools and communities further expose them to the everyday challenges faced by marginalized groups, deepening their understanding of social inequalities and motivating them to take action. ITEP also encourages action research, where future teachers investigate community issues like student dropout rates or sanitation awareness and propose practical solutions. Additionally, civic values are woven into the curriculum through courses on democratic principles, constitutional values, and global citizenship. These academic components, along with regular discussions on current social concerns, foster critical thinking and inspire pre-service teachers to become advocates for social change.

Ethical Reasoning

Ethical reasoning is the ability to evaluate situations and make decisions based on principles of fairness, justice, and integrity. Teachers play a pivotal role in modelling ethical behaviour, making it essential for their training to include a strong emphasis on ethics.

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) nurtures ethical reasoning in pre-service teachers by embedding it deeply into both coursework and practice. The curriculum features dedicated modules on professional ethics, moral philosophy, and value education, helping future educators grasp essential principles like integrity, fairness, and respect. Topics such as addressing bullying, handling diversity in the classroom, and making ethical decisions are explored through real-world case studies and reflective exercises. Teachers-in-training are encouraged to keep reflective journals, promoting self-awareness and critical introspection about their values and biases. Role-playing and simulation activities further strengthen ethical thinking by placing students in complex classroom scenarios, such as confronting discrimination or mediating peer conflicts. Additionally, the programme places a strong emphasis on equity and social justice. Courses on gender sensitization and inclusive education train pre-service teachers to recognize and challenge systemic inequalities, reinforcing the importance of creating respectful and fair learning environments for all. Through this multi-layered approach, ITEP prepares educators not just to teach, but to lead with ethics and empathy.

Social Responsibility

Social responsibility refers to the duty of individuals to contribute positively to society. For teachers, it encompasses fostering an inclusive, just, and sustainable society through education.

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) promotes social responsibility by equipping pre-service teachers with the knowledge, skills, and values necessary to contribute meaningfully to society. Through a multidisciplinary curriculum that integrates subjects like environmental science, sociology, and political science, ITEP broadens the perspective of future educators, helping them relate academic content to real-world social issues. Community engagement is a key component, where pre-service teachers identify local problems—such as inadequate hygiene or digital access—and work collaboratively with stakeholders to implement practical solutions.

The curriculum also emphasizes sustainable practices, encouraging involvement in environmental activities like tree plantation drives, recycling projects, and climate awareness campaigns, thereby fostering ecological consciousness. Courses on Indian Knowledge Systems (IKS) and cultural heritage enhance cultural sensitivity and national pride, guiding teachers to respect and celebrate diversity within their classrooms.

ITEP further strengthens social responsibility through partnerships with NGOs, government agencies, and international organizations, offering students opportunities to participate in socially impactful initiatives. These experiences are reinforced through core courses on ethics and civic responsibilities, as well as workshops on gender equity, anti-bullying, and inclusive practices. Internships and teaching practice in diverse settings allow pre-service teachers to apply these values, ensuring they graduate not just as educators, but as socially committed citizens.

Conclusion

The Integrated Teacher Education Programme (ITEP) is a comprehensive response to NEP 2020's vision of fostering socially responsible educators. By embedding equity, ethics, sustainability, and civic engagement into its curriculum, ITEP equips pre-service teachers with the knowledge, skills, and values necessary to address India's social and educational challenges. This alignment underscores ITEP's transformative potential in shaping educators who are not only effective in classrooms but also committed to the betterment of society. Through its holistic and multidisciplinary approach, ITEP represents a paradigm shift in teacher education, ensuring that future educators serve as ethical leaders and change agents in a rapidly evolving world.

The ITEP curriculum exemplifies a holistic approach to teacher education by embedding civic engagement, ethical reasoning, and social responsibility into its structure. Through a combination of theoretical courses, practical training, and experiential learning, pre-service teachers are empowered to become transformative educators. They are not only equipped to excel in pedagogy but also prepared to lead societal change, addressing inequalities, fostering inclusivity, and contributing to sustainable development. This alignment with NEP 2020's vision ensures that ITEP graduates emerge as socially conscious and responsible educators who can positively impact India's educational landscape and society at large.

Reference

- Biswal, A., & Pandey, A. (2022). Scientific Temper: From the Lens of Educational Policies. *Education India*, *11*(4), 1–8. https://www.researchgate.net/publication/368843583_Scientific_Temper_From_the_Lens_of_Educational_Policies#:~:text=Abstract,%22%20(Dhar%2C%202009).

- Chakraborty, R. (2022). Strategies to Implement Integrated Teacher Education Program in respect to NEP 2020.*International Journal of Novel Research and Development*, *7*(9), 359–361. https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2209042.pdf

- Gill, M. K. (2019). Integrated Teacher Education Programme- : A Critical Evaluation. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, *6*(1), 973–975. https://www.jetir.org/papers/JETIR1901H34.pdf

- Gupta, K. (2024). Effectiveness of Integrated Teacher Education Programme in alignment with NEP 2020: An Overview. *International Journal of Research Culture Society*, 8(8), 11–15. https://ijrcs.org/wp-content/uploads/IJRCS202408003-min.pdf

- Khan, S. A. (2021). Futuristic Trends of ITEP (Integrated Teacher Education Program) in India under the Light of Nep-2020, A Boon or Bane. *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*, *18*(7), 451–456.

- Kumar, R. (2023). Current Status of Integrated Teacher Education Programme in Arunachal Pradesh. *International Journal of Multidisciplinary Educational Research*, *13*(2(2)). DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.25 https://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume13/volume13-issue2(2)/5.pdf#:~:text=Arunachal%20Pradesh%20is%20one%20of%20the%20states,respect%20to%20colleges%2C%20universities%20and%20enrollment%20in

- Mandal, S. K. (2024). Four-year integrated Teacher Education Programme: A Policy Perspective of India. *International Journal for Innovative Research in Multidisciplinary Field*, *10*(2), 52–56. DOIs:10.2015/IJIRMF/202402007 https://www.ijirmf.com/wp-content/uploads/IJIRMF202402007-min.pdf

- Meenakshi, G. (2023). Perception of Student-Teachers on 4-Years Integrated Teacher Education Programme (ITEP). *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, *11*(3), e519–e530. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2303512.pdf

- Ministry of Human Resource Development, Government of India. (n.d.). *National Education Policy2020*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

- Panda, S. S., Malla, L., & Puhan, R. R. (2024). Revitalizing Teacher Education Programme In 21st Century India- Trends, Issues, and Challenges. *International Journal of Multidisciplinary Educational Research*, *13*(2(3)), 188–195. DOI: http://ijmer.in.doi./2024/13.64

- PIB Delhi. (2023, March 4). 4 year Integrated Teacher Education Programme(ITEP) launched in 57 reputed Central/StateGovernment Universities/Institutions fromAcademic session 2023-24 [Press release]. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1904184

- Sihem, B. (2013). Social Responsibility of Educators. *International Journal of Educational Research and Technology*, *4*(1), 46–51. https://soeagra.com/ijert/ijertmarch2013/8.pdf

- Sharma, D. (2024). Opinion of Teacher Educators on Opportunities and Challenges of Integrated Teacher Education Programme (ITEP). *Educreator Research Journal*, *XI*(I), 109–119. https://zenodo.org/records/10729322

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

Impact of Project Based Learning on Academic Achievement of Students

***Dr Syed Murtaza Fazl Ali**

ABSTRACT

In the present era students need opportunities to construct knowledge by solving real problems through asking and refining questions, designing and conducting investigations, gathering, analysing and interpreting information and data, drawing conclusions and reporting findings. Project based learning is an active student centred form of instruction which is characterised by student's autonomy, constructive investigations, goal setting, collaboration, communication and reflection within real world practices. Studies have shown that PBL leads to improved learning outcomes and higher performance compared to traditional teaching methods. The focus of the present paper is to study the impact of project based learning on academic achievement of students.

Introduction:- A great project can be transformative for students. Seeing a real-world impact gives them a sense of agency and purpose. Project based learning (PBL) is a novel or imaginative educational strategies. PBL has recently gained popularity across a variety of academic fields and across several national settings. (Shukla P. K & Kumar R, et al, 2024). It can significantly improve academic achievement by promoting deeper engagement, fostering critical thinking and enhancing problem solving skills. PBL encourages students to develop important life skills such as time management, organisation and goal setting. It provides authentic teaching and learning environment for students, teachers and administrators. Applications of PBL use extend from kindergarten to higher learning. The study has shown that compared with the traditional teaching model, PBL significantly improved students learning outcomes and positively contributed to academic achievement, affective attitudes and thinking skills, especially academic achievement. (Lu Zhang &Yan Ma, 2023)

Objectives of the study: For the present study the researcher has taken the following objectives into consideration and the data is secondary published in research journals, books, internet and Google Scholar, auto desk and other sources.

1. To study the Impact of Project Based Learning on Students' Performance.
2. To study the Improved Learning Outcomes
3. To study the Deeper Learning and Career Interests of Individuals
4. To study the Development of Essential Skills
5 To study the Increased Engagement and Motivation
6. To study the Success Skills and Teacher Relationships

Significance of the study: The present study aims to explore current PBL studies in education to explore their learning advantages, implementation, design and technology support. Project based learning is one of the most effective methods of teaching which provides extensive benefits for students, varying from creative thinking to project management to self-confidence. According to the studies of Autodesk foundation, project based learning has rapidly increased the scores in student assessments, classroom engagement and even in attendance. PBL has given as opportunity to teachers to strengthen their relationship with the students by serving as hands-on learning facilitators. It is an educational approach where students can approach one-another and learn by doing.

*Assistant Professor,Department of Education, Govt. GDC for women Sopore, University of Kashmir Mob. No. 9906668735, Email: geelanimurtaza@gmail.com

Review of related literature:

Project based learning does produce an increased perception of the acquisition of both the generic and specific skills (Ruiz-Rosa, I, Tano, D and Gracia-R, F,J.2021). The structured informal learning activity, the STEM project based approach was found effective in enhancing conceptual understanding and inventive thinking skills among secondary school students (Saleh, S M, A, & Abdullah, S.M 2020). PBL has a positive influence in students motivation and is able to enhance their cooperation skills as well (Shin, M.2018). The term intentional learning to refer to cognitive processes that have learning as a goal rather than an incidental outcome (Scardamalia & Bereiter, 2018). Students drive their own learning through inquiry, work collaboratively to research and create projects that reflect their knowledge (Bell S, 2010). The scientific technological PBL elevated pupils motivation and self-image at all levels and achieved significant affective learning (Doppelt Y,2003). Gorden (1998) makes the distinction between academic challenges, scenario challenges and real life challenges and PBL incorporates real life challenges. Learning in multiple classrooms, the variety of practices under the banner of PBL makes it difficult to assess, what is and what is not PBL, and whether what you are observing is a real project (Tretten and Zachariou, 1997). There are similarities between models referred to as PBL and models referred to with other labels, for e,g , Intentional learning , design experiments (Brown 1992) and problem based learning (Gallagher, Stepien & Rosenthal,1992). Should these other models be considered part of the PBL literature, and if so on what basis?.

Impact of PBL on Students Performance: Many studies have shown that project based learning can improve students' learning motivation, problem solving skills, team work and communication skills. PBL blends content mastery, meaningful work and personal connection to create powerful learning experiences in terms of both academic achievement and students' personal growth. Present era needs young people who are ready, willing and able to tackle the challenges of their lives for the betterment of the world and nothing prepares them better than project based learning. Project based learning significantly improved students learning outcomes.

Engaged hearts and minds: Students actively engage with PBL projects that provide real world relevance for learning. They can perform well, solve problems that are important to them and their communities.

Source: Lu Zhang &Yan Ma (2023)

Improved Learning Outcomes:

The study was conducted by Hastuti, Ambiyar & Nizwardi et. al (2022) and the objective of the study was to improve the creativity and learning outcomes of students by applying project based learning. It was concluded the PBL can improve learning outcomes, related to psychomotor learning. PBL can develop the creativity of learners in planning and completing a project.

Enhanced Understanding: PBL allows individuals to explore complex topics through hands-on projects, leading to a deeper and more meaningful understanding of the subject matter. Studies often show that PBL promotes deeper understanding of subject matter, strengthens cognitive strategies and enhances skills like problem solving, critical thinking and team work.

Increased Retention: The active learning nature of PBL helps students retain information better than passive learning methods. It can positively impact student's perceptions of learning, motivation and engagement leading to a more positive learning experience.

Higher Academic Achievement: Research consistently demonstrates that PBL leads to improved academic performance, particularly in areas like social studies and science. Source: Hastuti, Ambiyar & Nizwardi et. al (2022)

Why Project based learning? PBL engages students in learning that is deep and long lasting and inspires for them a love of learning and personal connection to their experience.

Deeper Learning and Career Interests: Usable knowledge is the ability to use ideas, to solve problems and explain phenomena. The capacity to enact knowledge to solve a problem requires a deeper level of science understanding than memorising information or procedures. Deeper learning emphasises understanding core concepts and higher order thinking skills, moving beyond rote memorization to apply knowledge in real world. PBL leads to deeper understanding and greater retention of content knowledge. Students are better able to apply what they know to new situations. Students interact with adults, business organisations and their community to strive for goals and develop career interests.

A study was conducted by Yoonhee Lee and Bora lee (2024), "Developing Career related Skills through Project Based Learning" and results from self reports showed that problem solving skills increases after 16 week participation. When using peers and raters' reports, the participants skills also significantly improved throughout the 16 week program.

Source:1. Emily C. Miller & Joseph S. Krajcik (2019) 2.Yoonhee Lee and Bora lee (2024)

Development of Essential Skills

The study was conducted by Annette Markula & Maja Akseka (2022), the results indicate that PBL may specifically promote the use of collaboration, artefacts, technological tools, problem centeredness and certain scientific practices such as carrying out research, presenting results and reflection within science education.

Critical Thinking and Problem Solving: PBL encourages students to analyse problems, explore different solutions, and make informed decisions, fostering critical thinking skills. Students learn to identify challenges, research solutions and implement strategies to address real world problems, enhancing their problem-solving capacities.

Collaboration and Communication: PBL often involves team work, allowing students to collaborate with peers, learn from each other and develop essential communication and interpersonal skills. Students must present their findings, explain their reasoning, engage in discussions and improve their communication skills.

Creativity: PBL allows students to express their ideas and explore different solutions promoting creativity and innovation. Students enjoy using a spectrum of technology tools from research and collaboration through product creation and presentation.

Source: Annette Markula & Maja Aksela (2022)

Increased Engagement and Motivation :

A study was conducted by English, A (2018) on utilizing PBL to increase engagement and performance in the high school classroom. In addition to creating an experience of civic participation, student engagement (as measured by rate of the completion of the project) and performance were tracked. Results support previous literature linking PBL to increased student engagement and performance. Another study conducted by Shin, M (2018), "Effects of PBL on students motivation and self efficacy". It was found that by participating in a PBL model, students are able to construct their own knowledge and reflect upon their learning projects, resulting in increased motivation and self efficacy.

Relevant and interesting learning: PBL connects learning to real world contexts, making it more engaged and relevant to students' lives.

Sense of Ownership: Students have more control over their learning journey, leading to increased motivation and engagement. They feel personally responsible for the quality and success of their work and the overall impact of their efforts on their academic success.

Personalized Learning: It is an educational approach that adapts teaching methods and content to the unique needs, learning styles and interests of each student, aiming to optimize their learning experience. PBL can be adapted to meet the individual needs and interests of students, enhancing their attraction and engagement.

Source:1. English, A (2018) 2. Shin, M (2018).

Success Skills and Teacher Relationships: Project based learning promotes students critical thinking skills, although moderated by education level and comparative learning strategies. It is superior to traditional learning at various levels of education. PBL is known to support students critical thinking skills. Students gain skills valuable in today's workplace and life, such as how to take initiative, work responsibly, solve problems, collaborate in teams and communicate ideas. Teacher student relationships can promote better student achievement particularly among low-income students. Through collegial relationships established by a project based pedagogy, teachers were able to develop positive relationships with students allowing them to use these relationships to personalize curriculum and differentiate instruction, resulting in student motivation and engagement. Teachers work closely with active and engaged students doing meaningful work and share in the rediscovered joy of learning.PBL gives students greater control and flexibility to prepare and engage more in their learning. It integrates cooperation with industry or professional communities to build real life issues to provide students with authentic learning experiences.

Source: 1.Tafakur Mr, Heri Retnawati & Ahmad A, M (2023) 2. Jennifer Ray Pieratt (2011)

Challenges and Considerations

Require Training and Development: Training and development are essential human resource activities aimed at improving employees' skills, knowledge and overall performance ultimately boosting organisational effectiveness. Teachers need to be trained on how to effectively implement PBL to maximize its benefits.

Can be Time Consuming: Designing and implementing PBL projects require students significant time and effort to organise their work effectively.

Require Assessment Methods Aligned with PBL: Traditional assessments may not accurately reflect the depth of learning achieved through PBL necessitating the development of alternative assessment strategies. The importance of authentic assessment where students are evaluated on their project outcomes and the skills they demonstrate is often highlighted.

Project based learning is a new model of inquiry based learning that is centred on the concepts and principles of a subject. With the help of multiple resources and continuous inquiry-based learning activities in the real world, with the aim of producing a complete project work and solving multiple interrelated problems within a certain period of time (Liu Jingfu and Zhong. Z. X, 2002). A new student cantered teaching approach, project based learning directly points to the goal of cultivating 21st century skills, especially higher order thinking skills and higher order thinking occurs based on problem solving, a challenging problem that emphasises real world situations and open environments and PBL motivates students to continuously explore in the process of problem-solving, thus promoting the development of higher order thinking.

Conclusion: A great project can be transformative for students. Project based learning is one of the most effective methods of teaching which provides extensive benefits for students, varying from creative thinking to project management to self-confidence. PBL blends content mastery, meaningful work and personal connection to create powerful learning experiences in terms of both academic achievement and students' personal growth. It promotes deeper understanding of subject matter, strengthens cognitive strategies and enhances skills like, problem solving, critical thinking and team work. It strengthens students to present their findings, explain their reasoning, engage in discussions and improve their communication skills. PBL motivates students to continuously explore in the process of problem-solving, thus promoting the development of higher order thinking.

References:

1. Annette Markula & Maja Aksela (2022), The key characteristics of project based learning: how teachers implement projects in K-12 science education, Disciplinary & Interdisciplinary Science Edu. Research 4, Article No. 2 (published Jan-06,2022)
2. Bell S, (2010) Project based learning for the 21st century: Skills for the future, The clearing house. A journal of educational strategies, issues and ideas, 83, 39-43.
3. Brown, A.L(1992), Design Experinents: Theoretical and methodological challenges in creating comlex interventions in classroom settings, Journal of the Learning Sciences, 2(2), 141-171
4. Doppelt Y,(2003), Implementation and assessment of project based learning in a flexible environment. International journal of technology and design education, 13,(3), 255-272 , oct.2003.
5. Emily C. Miller & Joseph S. Krajcik (2019), Promoting deep learning through project based learning: A design problem, Disciplinary & Interdisciplinary Science Edu. Research Vol.1, article No. 7, Published Nov.2019.
6. English, A (2018), "Utilizing PBL to Increase Engagement and Performance in the High School Classroom. Prairie Journal of Edul. Research 2(1), 2018
7. Gallagher, S.A, Stepien.W.J & Rosenthal .H, (1992), The effects of problem-based learning on problem solving. Gifted Child Quarterly, 36(4), 195-200.

8. Gordon, R.(1998), Balancing real-world problems with real world results, Phi Delta Kappan, 390-393
9. Hastuti, Ambiyar & Nizwardi et. al (2022) Project based learning to enhance creativity and learning outcomes . In book: Proceedings of the 9th international conference on technical and vocational education and trainings (ICTVET) pp67-73, 2022
10. Jennifer Ray Pieratt (2011), Teacher student relationships in project based learning: A case study of high tech middle north country, Research Gate.
11. Liu. Jingfu. F & Zhong Z.X (2002), Research on Project Based Learning Model, Foreign Education Research, (11), 18-22.
12. Lu Zhang &Yan Ma, (2023), "A study of the impact of project based learning on student learning effects: A meta analysis study". Front. Psychol.17 , Vol.14, July, 2023. Institute of Comp.& Inf. Sc and Smart Edu. Chongging Univ. China.
13. Ruiz-Rosa, I, Tano, D and Gracia-R, F,J (2021) Project based learning as a tool to foster entrepreneurial competences Cult. Educ.33(5), 1-29 doi, 2021
14. M Scardamalia & Carl Bereiter (2018), "Intentional learning as a goal of instruction" in book:Knowing, learning and instruction (pp361-392), University of Toronto.
15. Saleh, S Muhammad, A, & Abdullah, S.M (2020), Stem project based approach in enhancing conceptual understanding and inventive thinking skills among secondary school students
16. Shin, M (2018) Effects of PBL on students motivation and self efficacy. English Teaching ,Vol.73, No. 1 95-114, Spr,2018.
17. Shukla P. K & Kumar R, et al, (2024), In book: Teaching & learning techniques: A new paradigm chapter:3 pp 17-25, publisher Govt. College Zirapur, Dept. of Hr Edu., Govt. of M.P, India
18. Tafakur Mr, Heri Retnawati & Ahmad A, M (2023), "Effectiveness of project based learning for enhancing students critical thinking skills: A meta analysis, JINoP (Jurnal Inovasi Pembelajaran) 9(2), 191-209, Nov. 2023.
19. Tretten, R & P. Zachariou (1997), Learning about project based learning: Assessment of project based learning in Tinkertech schools, San Rafael, CA:The Autodesk Foundation
20. Yoonhee Lee and Bora Lee (2024), "Developing career related skills through project based learning" Studies in Edul. Evaluation, Vol.83, Dec.2024.

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

***दीप्ति गुप्ता**
****प्रो० स्वीटी श्रीवास्तव**
*****नमन गुप्ता**

शोध सार

समकालीन मनोविज्ञान में सामाजिक समायोजन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है। विद्यालय को समाज का लघु रूप माना जाता है। विद्यालय, विद्यार्थी, शिक्षक एवं साथी समूह आदि से सम्बन्धित होता है। विद्यालयी शिक्षा में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती हैं। इस दौरान विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं। किशोरावस्था के दौरान पारिवारिक, शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्र में ऐसी कई स्थितियाँ हैं, जो विद्यार्थी के लिए तनावपूर्ण होती हैं, जिससे उनके सामाजिक समायोजन की स्थिति डगमगा जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हरदोई जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–11 के 300 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक निदर्शन विधि से किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु ***डॉ० आशुतोष कुमार*** *द्वारा निर्मित* ***सोशल एड्जस्टमेण्ट स्केल (Social Adjustment Scale)*** *का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा–11 के विद्यार्थियों की अंकतालिका का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों के द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।*

संकेत शब्दः– विद्यार्थी, विद्यालय, समाज, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जन्म के समय शिशु में सामाजिकता का स्तर लगभग शून्य होता है। जैसे–जैसे उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास होने लगता है, वैसे–वैसे उसका समाजीकरण भी होने लगता है। जब बालक विद्यालय में प्रवेश लेता है, तो वह स्वयं को वहाँ समायोजित करने का प्रयास करता है। विद्यालय में अच्छा समायोजन बालक के अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करता है, किन्तु यदि वह अपने आप को विद्यालय या समाज में समायोजित नहीं कर पाता, तो उसके सामाजिक समायोजन की स्थिति डगमगा जाती है।

सामाजिक समायोजन संघर्ष से सहयोग की ओर अग्रसर होता है। सामाजिक समायोजन विद्यार्थियों के अन्तर–वैयक्तिक संबंधों और समूह में उनकी अन्तः क्रियाओं पर निर्भर करता है, चाहे

*****शोध छात्रा, शिक्षा प्रशिक्षण विभाग, दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, कानपुर नगर (उ०प्र०), Mobile.No. 8840684840, Email:- deepti.gupta2015@gmail.com
******प्रोफेसर, दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, कानपुर नगर (उ०प्र०), Mobile.No. 9839029011
******* शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ०प्र०), Mobile.No. 9140508251

वह कक्षा में हो या विद्यालय में। विद्यालय के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं। यह अवस्था जीवन में उन्नति एवं उपलब्धि की अवस्था है, किन्तु इसी अवस्था में सामाजिक समायोजन की समस्या बहुत अधिक रहती है, जिस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

शैक्षिक उपलब्धि को वर्तमान समय में प्रत्येक उपलब्धि का आधार माना जाता है। इसी वजह से पढ़ाई को लेकर आनन्द अब जुनून बन चुका है। प्रतिस्पर्धा के कारण प्रत्येक विद्यार्थी अपने को बेहतर सिद्ध करने का प्रयास करता है। यही प्रतिस्पर्धा जहाँ एक ओर विद्यार्थी को अच्छे शैक्षिक प्रदर्शन के लिए प्रेरित करती है, वहीं दूसरी ओर उसके सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित करती है।

सामाजिक समायोजन शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक महत्त्वपूर्ण कारक है। विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से समायोजित करने के लिए विद्यालय में एक सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाना आवश्यक है। यह विद्यार्थियों को बेहतर सीखने और शैक्षिक सफलता प्राप्त करने में मदद करेगा।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :

वर्तमान सन्दर्भ में परिवार, विद्यालय और समाज को एक नया आयाम प्रदान करने के लिए सामाजिक समायोजन महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। सामाजिक समायोजन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी प्रभाव डालता है। ऐसा माना जाता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी को समायोजन करने हेतु सुरक्षा की भावना एवं सांवेगिक स्थिरता की ओर अग्रसर करती है। इसके विपरीत निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। विद्यार्थियों के लिये सामाजिक समायोजन की अधिक आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न सन्दर्भ साहित्यों का अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्त्री ने यह पाया कि सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में इससे पूर्व भी कुछ अध्ययन किये जा चुके हैं, लेकिन अभी तक कोई भी ऐसा शोध अध्ययन नहीं हुआ, जिसके द्वारा सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध को जाना जा सके।

प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन से उसकी शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध को जानने में सहायता प्राप्त होगी। सामाजिक समायोजन के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी को सफल एवं खुशहाल जीवन जीने में सहायता मिलेगी। साथ ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में भी यह शोध महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। अतः इस क्षेत्र में प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता है।

समस्या कथन :

यह सर्वविदित है कि अच्छे सामाजिक समायोजन से व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अच्छा सामाजिक समायोजन विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है। **उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध के अध्ययन** से इसमें और अधिक स्पष्टता आयेगी।

चरों की संक्रियात्मक परिभाषा :

- **उच्चतर माध्यमिक स्तर**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत कक्षा–11 के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

- **सामाजिक समायोजन :**

समाज में दूसरों के साथ समायोजन सामाजिक समायोजन कहलाता है। सामाजिक समायोजन एक ऐसी दिशा और दशा है, जिसमें व्यक्ति समाज के सदस्यों के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करके अच्छे व्यक्तित्त्व का निर्माण करता है। सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करने के लिए सामाजिक समायोजन एक आवश्यक शर्त है।

- **शैक्षिक उपलब्धि :**

शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले कक्षा शिक्षण का प्रतिफल होती है, जो विद्यार्थियों द्वारा पूरे सत्र के अन्त में अधिगत की जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु कक्षा 11 में प्राप्त अंकों का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

H_1: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
H_0: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर सामान्य नहीं है।

H_2: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
H_0: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का स्तर सामान्य नहीं है।

H_3: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
H_0: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएँ :

- प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित हिन्दी माध्यम के राजकीय एवं अनुदानित विद्यालयों को ही जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु हरदोई जनपद के माध्यमिक स्तर के कक्षा–11 के 300 विद्यार्थियों को ही न्यादर्श में शामिल किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा–11 की अंकतालिका का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत लघु शोध हेतु हरदोई जनपद के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के राजकीय एवं अनुदानित विद्यालयों के कक्षा–11 के समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा हरदोई जनपद के माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के राजकीय एवं अनुदानित विद्यालय के कक्षा–11 के 300 विद्यार्थियों को चयनित किया गया। शोधकर्त्री ने विद्यालयों के नाम की पर्चियाँ बनाकर बिना वापसी के साथ साधारण न्यादर्शन विधि से विद्यालयों का चयन किया। इन विद्यालयों के नाम इस प्रकार हैं–

विद्यालयों के नाम

1. आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज, हरदोई। 75 विद्यार्थी
2. ए० एस० वी० वी० इण्टर कालेज, हरदोई। 75 विद्याथी
3. राजकीय इण्टर कालेज, हरदोई। 75 विद्यार्थी
4. लाल बहादुर शास्त्री इण्टर कालेज, हरदोई। 75 विद्यार्थी

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

- **सोशल एड्जस्टमेण्ट स्केल (Social Adjustment Scale)** सामाजिक समायोजन के मापन हेतु **डॉ० आशुतोष कुमार** द्वारा निर्मित **सोशल एड्जस्टमेण्ट स्केल (Social Adjustment Scale)** का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण में कुल 16 पद हैं। उपकरण में 16 पद (14 सकारात्मक एवं 2 नकारात्मक पद) दिए गये हैं।
- **शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा 11 में प्राप्तांक**
  प्रस्तुत शोध में **कक्षा–11** के विद्यार्थियों को पढ़ाये जाने वाले सम्पूर्ण विषयों का सम्बन्धित विद्यालय के द्वारा जो मूल्यांकन किया गया है, उसमें प्राप्त प्रतिशत को ही शैक्षिक उपलब्धि माना गया है, जिसमें तीन स्तर हैं–

क्रम सं०	प्राप्तांक	श्रेणी
1.	60% या अधिक अंक प्राप्त करने वाले	उच्च श्रेणी
2.	45% से 59.99% तक अंक प्राप्त करने वाले	औसत श्रेणी
3.	44.99% या कम अंक प्राप्त करने वाले	निम्न श्रेणी

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ :

शोधकर्त्री द्वारा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

- **काई वर्ग परीक्षण**

काई वर्ग χ^2 ज्ञात करने का सूत्र है–

$$\chi^2 = \Sigma \frac{(fo - fe)^2}{fe}$$

- **सहसम्बन्ध**

प्रकीर्ण आरेख विधि द्वारा **पीयर्सन** r ज्ञात करने का सूत्र है–

$$r = \frac{\frac{\Sigma x' y'}{N} - \left(\frac{\Sigma f x'}{N}\right)\left(\frac{\Sigma f y'}{N}\right)}{\left[\left(\frac{\Sigma f x'^2}{N}\right) - \left(\frac{\Sigma f y'}{N}\right)^2\right]\left[\left(\frac{\Sigma f y'}{N}\right) - \left(\frac{\Sigma f y'}{N}\right)^2\right]}$$

आँकड़ों का विश्लेषण :

प्रथम परिकल्पना का परीक्षण :

H_1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर सामान्य है।

H_0: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर सामान्य नहीं है।

तालिका संख्या–1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के अध्ययन से प्राप्त अंकों के सांख्यिकीय परिणाम

सामाजिक समायोजन का स्तर / सोपान	अति उच्च	उच्च	औसत	निम्न	अति निम्न	काई –वर्ग	(df) का मान	(df) पर काई– वर्ग	सार्थकता स्तर	परिणाम
f_o	02	57	180	60	01	35.155	4	9.488	0.05	H_0 अस्वीकृत
f_e	11	71	136	71	11					

तालिका संख्या–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक समायोजन का काई वर्ग मान 35.155 है, जो मुक्तांश (df) 4 के 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 9.488 से अधिक है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर सामान्य नहीं होता है' अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि **उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर सामान्य होता है।**

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण :

H_2: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर सामान्य होता है।

H_0: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर सामान्य नहीं होता है।

तालिका संख्या–2

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से प्राप्त अंकों के सांख्यिकीय परिणाम

शैक्षिक उपलब्धि का स्तर / सेपान	निम्न	सामान्य	उच्च	काई–वर्ग	(df) का मान	(df) पर काई–वर्ग	सार्थकता स्तर	परिणाम
f_o	00	34	266	1179.75	4	9.488	0.05	H_0 अस्वीकृत
f_e	48	204	48					

तालिका संख्या–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि का काई वर्ग मान 1179.75 है, जो मुक्तांश (df) 4 के 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 9.488 से अधिक है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर सामान्य नहीं होता है' अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि **उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर सामान्य होता है।**

तृतीय परिकल्पना का परीक्षण

H_3: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

H_0: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है।

तालिका संख्या–3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध के अध्ययन से प्राप्त अंकों के सांख्यिकीय परिणाम

सं० (N)	चर (Variable)	सहसम्बन्ध गुणांक (Correlation Coefficient)	सार्थकता स्तर (Level of Significance)
300	सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि	0.04023	0.5

तालिका संख्या–3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0. 04023 है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है' अस्वीकृत होती है तथा हमारी शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि **उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध (Moderate Positive Correlation) होता है।**

निष्कर्ष :

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर सामान्य होता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर सामान्य होता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

शैक्षिक निहितार्थ :

विद्यार्थी देश के भविष्य होते हैं। उन्हें उचित शिक्षा प्रदान करना एवं तनाव से मुक्त रखना शिक्षक, अभिभावक तथा समाज का कर्तव्य तथा उत्तरदायित्त्व है। इन्हीं कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्त्वों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ है–

- विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को करने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा सकते हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सकती है।
- शिक्षक अपने विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध को जानकर उन्हें शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर सकता है।
- समस्त विषयों को क्रियात्मक एवं रूचिपूर्ण ढंग से अध्यापन करके विद्यार्थियों का ध्यान विषय की ओर केन्द्रित किया जाये।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने हेतु प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों द्वारा विद्यालयों के वातावरण को स्वस्थ व ऊर्जावर्द्धक बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

कुमार, आशुतोष. (2016). सोशल एड्जस्टमेण्ट स्केल. आगराः नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कला समावेशी शिक्षण में शिक्षकों की सक्रिय भूमिका और चुनौतियाँ तथा समाधानः एक अध्ययन

***रेनू तोमर**

शोधसार

आज के वैश्विक परिवेश में शिक्षा ज्ञान का संप्रेषण मात्र न होकर समग्र व्यक्तित्त्व के बहुस्तरीय विकास की प्रकिया की ओर उन्मुख है। पारम्परिक शिक्षण प्रक्रिया एकांगी, विषय केन्द्रित और रटने रटाने की है जो विद्यार्थियों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और संप्रेषण क्षमता को सीमित करती है। इसके विकल्प के रूप में कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया एक अभिनव महत्त्वपूर्ण रणनीति है जो विद्यार्थियों के बौद्धिक कौशल के साथ–साथ भावनात्मक,सामाजिक तथा सौन्दर्यबोध,अन्वेषण की प्रवृत्ति,संरचनात्मकता,संवाद,संप्रेषण,सामाजिक कौशल तथा सौन्दर्य बोध चेतना का भी विकास करती हैं।इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक,भावात्मक एवं सामाजिक विकास हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। यह शोध उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों की प्राप्ति में कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया की अनिवार्यता तथा इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका और उनसे जुड़ी चुनौतियों एवं संभावित समाधानों का विश्लेषण करता है। इस शोध पत्र के अध्ययन में पाया गया कि कला समावेशी शिक्षण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है जिसमें शिक्षक केवल ज्ञान बाँटने वाला न होकर एक मार्गदर्शक,एक प्रेरक,संयोजक सह–अधिगामी व अन्वेषक होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैंकि शिक्षक एक संवाहक के रूप में उत्साहित तो हैं किन्तु पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव,पाठ्यचर्या की जटिलता,समय की कमी,संसाधनों की अनुपलब्धता,विद्यार्थियों एवं प्रशासन का असहयोग तथा शिक्षकों की पारंपरिक मानसिकता इसके क्रियान्वयन में अवरोध उत्पन्न करती है। शिक्षक संभावित समाधानों के साथ शिक्षण को अर्थपूर्ण,रोचक तथा प्रेरणादायक बनाकर विद्यार्थियों के समग्र विकास में एक महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।

❖ प्रस्तावना–

"अगर बच्चे उस तरह से नहीं सीख पाते हैं जैसा उन्हें सिखाया गया, तो क्यों न उन्हें उस तरह सिखाया जाये जैसे वे सीख सकें"–श्री के0राम मोहन राव,तत्कालीन राज्य परियोजना निदेशक, (संवाद पृष्ठ सं0–4)[1] का यह वाक्य शिक्षक के लिए एक दिशा निर्देश है कि शिक्षा केवल कक्षा–कक्ष की परिधि तक सीमित,ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया मात्र नहीं है,अपितु एक बहुआयामी विकास की सतत् प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों ही अपने आस–पास की दुनिया के अनुभवों से स्वयं भाग लेते हुए सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं।

"कला को अकसर एक विलासिता के रूप में देखा जाता है लेकिन वो हमारी शिक्षा प्रणाली में एक आवश्यकता है"। कीर स्टारमर–प्रधानमंत्री यू0के0–14 मार्च–2024 (लेबर क्रियेटिव कॉफ्रेंस)[2]कला की विभिन्न विधाओं जैसे–दृश्यकला,संगीत,नाटक,नृत्य,कविता,साहित्य,हस्तशिल्प तथा भ्रमण आदि के समावेश से शिक्षण अधिक सजीव,आकर्षक,रोचक तथा अधिगम और अधिक प्रभावी बनता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी आत्म–निर्माण,आलोचनात्मक चिन्तन,सीखने की दिशा,मूल्यबोध, रुचियाँ और आत्म विश्वास तथा सामाजिक बोध की दिशा में बढ़ते हैं। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका निर्णायक तथा संवाहक की हो जाती है। जो कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया को अपनाकर न केवल

*****एम.ए. (हिन्दी, इतिहास), एम.एड., प्रधानाचार्या, जवाहर लाल मेमोरिलय गर्ल्स इंटर कॉलेज, आर्डनेंस फैक्ट्री, मुरादनगर, गाजियाबाद, मो0 नं0. 9999259108, Email.:-renutomar1964@gmail.com

शिक्षण को रोचक,सरल और आनन्दमयी बनाता है अपितु विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति,कल्पनाशक्ति,सौन्दर्य बोध,रचनात्मकता,सामाजिकता तथा सौहार्द के गुणों का भी विकास करता है।

"शिक्षा वह नहीं,जो किताबों से मिलती है,बल्कि वह है जो आपके अनुभव और सृजनात्मकता से उपजती है"–अल्वर्ट आइंस्टाइन[3]। शिक्षक की भूमिका रचनात्मक जुड़ाव की है जो शिक्षण को सुविधाजनक बनाता है तथा समय के साथ विद्यार्थियों के ज्ञान कौशल एवं समझ को विकसित करते हुए उनके सीखने की प्रक्रिया को गहरा करते हैं।

"किसी विद्यालय में प्रत्येक बच्चे का अपनी गति और उम्र के अनुसार सीखना,विद्यालय और कक्षा में भय,तनाव और चिन्तामुक्त वातावरण का होना बच्चों की दृष्टि से विद्यालय में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का रूचिपूर्ण होना विद्यालय में मौजूद शिक्षक/शिक्षिकाओं का दायित्व है" श्री भगवती सिंह, तत्कालीन वरिष्ठ विशेषज्ञ–संवाद[4]।शिक्षक विभिन्न कला विधाओं–चित्रकला, हस्तकला,शिल्प (कठपुतली, मुखौटे) संगीत,गीत,नृत्य नाटक को पारंपरिक शिक्षण विधि से एकीकृत करता है तथा बच्चे की क्षमता के आधार पर शैक्षिक योजना, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं के प्रति संवेदनशील होकर ऐसी रणनीतियाँ बनाता है जिसमें बच्चों को बिना भय,संकोच तथा असफलता के डर से बाहर आने के अवसर दिये जाये जहाँ वो उत्साह पूर्वक शिक्षा प्रक्रिया में भागीदारी करें।शिक्षा को सूचनाओं के संप्रेषण या तथ्यों की पुनरावृत्ति की परिधि से बाहर निकाल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को समाहित करना होगा, जहाँ वह संज्ञानात्मक,भावनात्मक,रचनात्मक,सामाजिक और सौन्दर्य कौशलों का विकास कर सकें।

डेलोर आयोग की रिर्पोट जो शिक्षा को "मूल्यनिष्ठ मानव विकास" की प्रक्रिया के रूप में देखती है। इस प्रक्रिया में शिक्षक कला विधाओं के माध्यम से शैक्षिक विषयों को गहराई के समझने के साथ–साथ उन्हें जीवन से जुड़े कौशल तथा आत्मविश्वास और आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता को भी बढ़ाता है।एक संप्रेषक न होकर सह–निर्माता,सृजनात्मक प्रेरक और संज्ञापन की भूमिका में होता है,जो अधिगम को गहन, अनुभावात्मक, रोचक, सरल, आनन्दमयी बनाकर उनके संज्ञानात्मक,भावात्मक,रचनात्मक तथा नैतिक व सामाजिक विकास को पोषित करता है।[5]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 कला,संगीत,नृत्य रंगमंच पर राष्ट्रीय फोकस समूह केआधार पत्र के दिशा निर्देश में कहा गया है कि कला का प्रयोग सीखने के आधार रूप में होना चाहिए तथा कला समेकित शिक्षण को एक प्रभावी अधिगम पद्वति के रूप में मान्यता दी गई है।[6]

❖ अध्ययन की आवश्यकता तथा महत्त्व :–

"शिक्षक को बाल केन्द्रित शिक्षा प्रदान करने के लिए अपनी भूमिका को बदलना होगा,अब उसकी भूमिका ज्ञान बाँटने या देने की नहीं होगी। ज्ञान सर्जन के बच्चों को कब और कैसे मौके दिये जाये इस पर चिन्तन मनन करना होगा और तब इसे कार्यरूप में परिणत करना होगा"। संवाद,पृष्ठ–40[7]
वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञान के हस्तांतरण,रटने–रटाने की विधि,अंकों की प्रतियोगिता और भावनात्मक अभिव्यक्ति की उपेक्षा से जूझ रही है। इसके विकल्प के रूप में कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया एक ऐसी रणनीति के रूप में उभरी है जो विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक,रचनात्मक,भावनात्मक तथा सामाजिक व संवाद कौशल का विकास करती है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक केवल पाठ्य पुस्तकों के वाहक न बनकर शिक्षण को कक्षा–कक्ष की परिधि से बाहर लाकर,अनुभव के आधार पर

शिक्षण प्रक्रिया संपादित करें। यह शोध इसलिए भी आवश्यक व महत्त्वपूर्ण हो जाता है जिससे मूल्यांकन किया जा सके कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षक इस प्रक्रिया के प्रति कितने उत्सुक,उत्साहित,इच्छुक व सक्षम हैं, व्यावहारिक धरातल पर उन्हें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और वह समाधान खोजने के प्रति कितने जागरूक तथा निष्ठावान हैं।

"राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 बाल केन्द्रित कुछ महत्त्वपूर्ण बदलाव यथा–बाल केन्द्रित एवं लचीली शिक्षण प्रक्रिया, बच्चों को स्वायत्तता,बच्चों को सहयोग द्वारा सीखने को प्रोत्साहन,सीखने में बच्चों की सक्रिय भागीदारी,ज्ञान विकसित होता है,रचा जाता है"।सवांद–अध्याय–5 पृष्ठ–49[8]। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 में भी इस शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देने की अनुशंसा, एक अभिनव तथा प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया के रूप में मान्यता दी गई है। उच्चतर माध्यमिक स्तर वह संवेदनशील अवस्था है जिसमें विद्यार्थी अपने व्यक्तित्त्व,रूचियों व सोच की दिशा तय करते हैं, यदि शिक्षक उन्हें कला आधारित अनुभव परख एवं संवेदनशील शिक्षण देते हैं तो न केवल उनके अकादमिक कौशल अपितु भावनात्मक,रचनात्मक,संवेदात्मक कौशल का विकास होगा, अतः यह शोध और भी अधिक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

❖ सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- डेलोर रिर्पोट"के आधार पर यूनेस्को द्वारा प्रकाशित पुस्तक "लर्निंग–द ट्रेजर विदन" [9] में जीवन भर की शिक्षा के चार स्तम्भ (1) जानने के लिए–सीखना, (2) करने के लिए–सीखना,(3) अस्तित्त्व के लिए–सीखना 4.साथ रहने के लिए–सीखना बताये गये हैं,जिसके अनुसार शिक्षा को संघर्षों से बचकर शांतिपूर्ण,सह–अस्तित्त्व एक दूसरे को सम्मान देने वाली,खेल सांस्कृतिक गतिविधियों और सामाजिक रूप में भागीदारी के माध्यम से,सहकारी उपक्रमों से परिचित कराने के लिए पर्याप्त समय व अवसर तथा शिक्षा मानव शरीर,मन और आत्मा का विकास करने वाली होनी चाहिए। तीसरे तथा चौथे स्तम्भों का आधार बिन्दु कला समावेशी शिक्षा है जिसमें शिक्षक वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए भावी पीढ़ी को तैयार करने तथा शिक्षा के उद्‌देश्य प्राप्ति हेतु तत्पर है।
- **<u>सियोल एजेण्डा–2010– कला शिक्षा के विकास के लक्ष्यः</u>**[10]

➢ बच्चों, युवाओं और आजीवन शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सौदर्य बोध और सामाजिक विकास के लिए संतुलित मंच के रूप में कला शिक्षा।

➢ उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम,समग्र दृष्टिकोण विकसित करना, अनुसंधान,साझेदारी और सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा देना।

➢ कला शिक्षा सिद्वान्तों को और प्रथाओं को लागू करना ताकि वर्तमान वैश्विक,सामाजिक–सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना किया जा सके।

- **संवाद**–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005,बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के सन्दर्भ में शिक्षकों की हस्तपुस्तिका,सर्व शिक्षा अभियान, लखनऊ,उत्तर प्रदेश,राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में शिक्षकों की भूमिका अध्याय 5 और हमारी कक्षा अध्याय 3 कला सवावेशी शिक्षण में शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा की गई है।[11]
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020शिक्षा को समग्र और व्यापक बनाने पर जोर, केवल किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि कला,संगीत खेल, कौशल,विकास,नैतिक विकास को भी शामिल किया गया,जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।[12]

- हावर्ड यूनिवर्सिटी –(HPZ) (1967) "प्रोजेक्ट जीरो"–दार्शनिक नेलस्न गुडमैन द्वारा प्रोजेक्ट जीरो को प्रारम्भ किया गया,जिसमें कला में और उसके माध्यम से सीखने और समझने पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ शुरूआत हुई,इसमें कला के लिए जूनून भी शामिल था।[13]
- N.C.E.R.T राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा ''कला समेकित अधिगम एवं विस्तृत अध्ययन'' प्रकाशित किया है,जिसके अनुसार कला समेकित अधिगम शिक्षा शास्त्र के रूप में संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण करता है,और वास्तविक कक्षा में इसे अपनाने की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है। ncert.nic.in[14]
- हेडंसरसन लैसली–(2014 पृष्ठ सं0–7)शिक्षण रचनात्मक अभिव्यक्ति और कला का उपयोग संज्ञानात्मक,भाषा,सामाजिक,भावनात्मक और मोटर कौशल का अभ्यास करने के लिए कर सकते हैं। जब वे उन्हीं विषयों में एकीकृत करते हैं,उन्हें सामग्री से जोड़ते हैं,यह बच्चों को असफलता पर चिंता किये बिना खेल के माध्यम से सीखने के लिए प्राकृतिक अवसर प्रदान करता है[15]।
- कन्स्ट्रक्टिवविज़म का सिद्वांत,(सक्रिय अधिगम का विकास)–यह सिद्वांत मानता है कि विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता नहीं होते हैं बल्कि सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। विद्यार्थी ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। कला आधारित शिक्षक उन्हें अवलोकन,अन्वेषण और विश्लेषण के लिए प्रेरित करता है। इस सिद्वान्त के प्रमुख विचारक जीन पियाजे, जॉन डीवी,ब्रुनर और लेव वायगोत्स्कीस हैं।[16]
- बहु–बुद्वि सिद्धान्त–हावर्डगार्डनर(1983) "फ्रेम ऑफ माइंड थ्योरी ऑफ मंटीपल्स इंटेलिजेंसेस"कला समेकित अधिगम का सिद्वान्त इस विचार पर आधारित है कि सीखने के विभिन्न आयाम होते हैं। कला समेकित शिक्षण इन सभी को सक्रिय करता है।[17]
- अनुभवात्मक शिक्षण–डेविड कोल्ब–(1984)यह दृष्टिकोण सीखने की प्रक्रिया को केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव, परावर्तन,प्रयोग और अनुप्रयोग पर बल देता है। अनुभव को प्रभावी शिक्षण में बदलना शामिल है। ठोस अनुभव, चिन्तनशील अवलोकन सक्रिय प्रयोग को प्राथमिकता दी गई जो कला समावेशी शिक्षण का आधार है।[18]
- "अच्छे स्कूल की अवधारणा(2015)"ने प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक सुविधाकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका पर जोर दिया, और व्यक्तिगत जरूरतों और विकल्पों को पूरा करने में शिक्षक को सहायक माना गया (गेरोस मोक्यक्लोस कोन्सेप्सिया–2015) निःसंदेह शिक्षा प्रणाली में सभी प्रणालीगत परिवर्तन होने चाहिए ताकि समावेशी शिक्षा एक वास्तविकता बन सके।[19]

❖ तकनीकी शब्द–

- कला समावेशी शिक्षा–शिक्षण प्रक्रिया में कला की विधाओं को एकीकृत कर विद्यार्थियों को समान अवसर और समाधान उपलब्ध कर भागीदारी सुनिश्चित करना।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–शिक्षा में सीखने की प्रक्रिया।
- शिक्षक की भूमिका– अपने ज्ञान,अनुभव व शिक्षण कौशल के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- सर्वांगीण विकास–विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास,रचनात्मक विकास तथा मनोगत्यात्मक विकास ही सर्वांगीण विकास है।

❖ समस्या कथनः –

यद्यपि कला समावेशी शिक्षण को शिक्षा का अनिवार्य अंग मान लिया गया है परन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इसके कियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका अभी भी चुनौतीपूर्ण है। नीति स्तर

पर इसके लिए रूझान की कमी तथा शिक्षक भी इसको लेकर अधिक उत्साहित नहीं हैं। वे आज भी पारंपरिक शिक्षण में सहज महसूस करते हैं। शिक्षक इस प्रक्रिया के सूत्रधार व संवाहक हैं परन्तु अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ इस प्रक्रिया के क्रियान्वयन में उनके सामने बाधायें बनकर खड़ी हैं।यह शोध इसलिए भी आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों की इस अभिनव शिक्षण प्रक्रिया में बदलती हुई भूमिका को स्पष्ट कर उनके सम्मुख आने वाली चुनौतियों तथा संभावित समाधानों का विश्लेषण किया जाये,ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हुए शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

❖ **शोध आलेख के उद्देश्य–**

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया की अवधारणा तथा प्रासंगिकता का विश्लेषण।
- कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका और कार्य प्रणालियों का विश्लेषण करना।
- शिक्षकों द्वारा अनुभव की जाने वाली व्यावहारिक चुनौतियों एवं संभावित समाधान की पहचान करना।

❖ **अध्ययन की परिकल्पना–**

- इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- इस प्रक्रिया के क्रियान्वयन में शिक्षकों के समक्ष अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं।
- इन चुनौतियों के संभावित समाधानों को खोजकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा विद्यार्थियों का संर्वांगीण विकास सम्भव है।

❖ **शोध विधि :–** यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकृति का है। शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली उत्तरदाताओं द्वारा भरी गयी, इसके लिए शोधार्थी ने उत्तरदाताओं से उनके विद्यालयों में जाकर व्यक्तिगत सम्पर्क किया। कक्षा–12 के विद्यार्थियों की कक्षा का अवलोकन किया गया, अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि कला समावेशन आधारित सहयोगात्मक शिक्षण से विद्यार्थियों को विषयवस्तु न केवल अधिक रोचक लगी, बल्कि उनकी स्मृति में दीर्घकाल तक बनी रही।

- सिंधु घाटी सभ्यता को समझाने हेतु मोहरे, बर्तन आदि के मॉडल का उपयोग किया गया, जिससे विद्यार्थियों को विषयवस्तु की अवधाराणाओं की स्पष्टता और रूचि में वृद्धि हुई।
- हिंदी की कहानियों को मॉडल द्वारा प्रस्तुत करने से कथानक और संदेश का बोध अधिक सहज हुआ।
- जल संरक्षण विषय को कठपुतली के माध्यम से पढ़ाए जाने पर विद्यार्थियों में आपसी सहयोग, समन्वय और सामूहिक सहभागिता की भावना का विकास देखा गया।

❖ **न्यादर्श–**प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श में जनपद गाजियाबाद के 05 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (04 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जवाहर लाल मैमारियल गर्ल्स इण्टर कॉलिज, आयुध निर्माणी इस्टेट, मुरादनगर, श्री हंस इण्टर कॉलिज,मुरादनगर,पूर्णज्ञानांजलि इ0का0मुरादनगर,राजकीय आयुध निर्माणी इण्टर कॉलिज, मुरादनगर) तथा 01 पी0एम0श्री0 केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी,मुरादनगर के 50 शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

❖ कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया की अनिवार्यता तथा शिक्षकों की भागीदारी एवं चुनौतियों के शोध अध्ययन में विद्यालय प्रधानाचार्यो से पूर्व में सहमति लेकर विभिन्न विद्यालयों के 50 शिक्षकों पर किये गये शोध का परिणाम–(प्रतिशत में) व्यक्त किये है।

❖ गुणात्मक साक्षात्कार की भूमिका से सिद्ध होता है कि शिक्षक इस नीति के प्रति उत्साहित और पक्षधर तो हैं परन्तु व्यावहारिक स्तर पर प्रशिक्षण, संसाधान व प्रोत्साहन की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

शोध आकड़ों के विश्लेषण का परिणाम (प्रतिशत में) एवं व्याख्या–

तालिका–01

परिकल्पना प्रथम– इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्र. सं	प्रश्न	विकल्प	संख्या	प्रतिशत	विशेष विवरण
1	क्या आपने कला समेकित शिक्षण का प्रयोग कक्षा में किया हैं?	हां	42	84	N=50
		नही	06	12	
		कभी–कभी	02	04	
2	कला समेकित शिक्षण विद्यार्थियों के समग्र विकास में कितनी महत्त्वपूर्ण है ?	अत्यधिक महत्वपूर्ण	37	74	
		महत्वपूर्ण	01	02	
		कम महत्वपूर्ण	12	24	
		बिल्कुल महत्वपूर्ण	00	00	
3	कला समेकित शिक्षण में किस प्रकार के कला रूपों का प्रयोग करते हैं ?	चित्रकला	25	50	
		संगीत	08	16	
		नृत्य	08	16	
		नाटक थियेटर	04	08	
		कहानी लेखन या कविता	05	10	
4	कला समेकित शिक्षण से विद्यार्थियों में प्रमुख कौशल और गुण विकसित होते है?	रचनात्मक सोच और कल्पना शक्ति	48	96	
		समस्या सुलझाने की क्षमता	38	76	
		आत्मविश्वास और आत्म व्यक्तित्व	40	80	
		समाजिक और भावात्मक समझ	35	70	
5	क्या कला समेकित शिक्षण विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है?	टीमवर्क और सहयोग	36	72	
		हां, बहुत प्रभाव	40	80	
		हां, कुछ हद तक प्रभाव	10	20	
6	कला समेकित शिक्षण रचनात्मकता और सोचने की क्षमता को बढ़ाता है?	नहीं, कोई प्रभाव नहीं	00	00	
		मुझे नहीं लगता	00	00	
		जिज्ञासा एवं कल्पना शक्ति	40	80	
		करके सिखना	05	10	
		समूह कार्य द्वारा समस्या का समाधान	05	10	
7	क्या कला समेकित शिक्षण समाजिक,मानसिक और भावनात्मक क्षमता को बढाता है?	हाँ	49	98	
		नहीं	00	00	
		कभी–कभी	01	02	
8	कला समेकित शिक्षण के दौरान संज्ञानात्मक और संवेगात्मक विकास विकसित कैसे होता है?	आत्मविश्वास, आत्म अभिव्यक्ति	44	88	
		निर्णय लेने की क्षमता, सोचने और तर्क	46	92	
		समाजिकता, सहयोग कौशल का विकास	44	88	
9	कला समावेशी शिक्षण से विद्यार्थियों का मानसिक और भावनात्मक विकास प्रभावित होता हैं?	मानसिक	15	30	
		भावनात्मक	17	34	
		आत्म अभिव्यक्ति	04	08	
		आत्मविश्वास	14	28	

❖ शोध की प्रथम परिकल्पना से ज्ञात होता है कि इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है–

- **शिक्षकों की भूमिका में परिवर्तन–** पारंपरिक शिक्षक को ज्ञान प्रदाता से सहयोगी तथा मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए बच्चों को कक्षा–कक्ष में कला प्रक्रिया के लिए उत्साहित करना है। वह विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को व्यक्तिगत,अर्थपूर्ण तथा रचनात्मक बनाने में एक आदर्श

मार्गदर्शक होता है। उनका दायित्त्व केवल व्यावसायिक क्षमता के लिए केवल ज्ञान संप्रेषण करने वाला नहीं अपितु एक प्रेरणा स्रोत निर्माता का भी है। अतः उन्हें विद्यार्थियों के अंदर जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करना उनका मुख्य दायित्त्व है।

- शिक्षक सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं के प्रदर्शन हेतु शिक्षण को नवीन व आकर्षक बनाता है तथा समस्या समाधान पर केन्द्रित रचनात्मक परियोजनाओं को लागू करता है। अनुभव के अवसर प्रदान कर,विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सीखने,विचार करने और विद्यार्थियों की निजी रूचि को प्राथमिकता देते हुए समस्याओं के हल के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमता को ध्यान में रखकर रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित करने हेतु सहयोगी वातावरण तैयार करता हैं जहाँ विद्यार्थी अपने विचारों को खुलकर व्यक्त कर सके।
- **प्रोत्साहन व सम्मान :–** शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकता को समझकर हमेशा कुछ नया करने के लिए प्रेरित करता है। विद्यार्थियों के प्रयासों का सम्मान,प्रोत्साहित कर जिस विधा में विद्यार्थी की रूचि हो, उसके प्रति सकारात्मक सोच रखते हुए उन्हें जोश, उमंग के साथ नवाचार के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक एक प्रेरणा स्रोत बन विद्यार्थी के आत्मविश्वास को बढ़ाते हुए उनकी रूचि और प्रतिभा को निखारता है,क्योंकि शिक्षक इस प्रक्रिया के केन्द्र बिन्दु हैं। अतः उन्हें कक्षा–कक्ष की परिधि से बाहर आकर,विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर उनकी क्षमताओं को विकसित करना ही उनका दायित्त्व है।
- सहयोगात्मक शिक्षण में तकनीकी का उपयोग–सहयोगात्मक शिक्षण तकनीक का उपयोग कर शिक्षण को दीर्घकालीन बनाना ही इसकी सार्थकता को सिद्ध कर सकता है। शिक्षक को अन्य विषय के शिक्षकों, कलाकारों के साथ मिलकर शिक्षण कार्य प्रक्रिया में नये–नये प्रयोग करने चाहिए। उदाहरण स्वरूप इस शोध में छात्राओं द्वारा बताया गया कि अनेक विषय अध्यापिकाओं तथा सहपाठियों के साथ मिलकर उन्होनें पर्यावरण सम्बन्धी अनेक समस्याओं को कठ्पुतली कला के माध्यम से स्कूल में प्रस्तुत किया,जिसमें उन्हें बहुत आनन्द आया। इस प्रकार नाटक, शिल्प को माध्यम बना, विषय वस्तु को संप्रेषित करना और भी अधिक उपयोगी सिद्व होता है। कक्षा 12 की छात्राओं ने समूह में मिट्टी के मोहरें,मनकें,बर्तन आदि बनाकर सिन्धु नदी घाटी की विशेषताओं का पाठ को समझा जो प्रभावशाली एवं दीर्घकालिक रहा। हिन्दी विषय शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में छात्राओं द्वारा समूह बनाकर कहानी,कविता पर आधारित प्रोजेक्ट बनाये गये,जिनसे उनके भाषा कौशल एवं संवाद कौशल में सुधार हुआ।
- विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के लिए कला आधारित शिक्षण पद्धति की अनिवार्यता– शिक्षकों को ऐसे अनुकूलनशीलता पूर्ण पाठ्यक्रम तैयार करने होंगे जो विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के अनुसार विभिन्न शैलियों तथा पद्धतियों द्वारा परिवर्तित किये जा सकें।
- विद्यार्थियों के सीखने तथा मूल्यांकन प्रणाली में सुधार :-शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चा कक्षा में रूचि व जोश के साथ सीख रहा है। स्वयं की सक्रिय भूमिका के साथ–साथ विद्यार्थियों के सक्रिय योगदान को भी संपादित करना होगा। परीक्षा प्रणाली को केवल अंक आधारित पारंपरिक परीक्षा प्रणाली की मानसिकता से हटकर यह समझना होगा कि 03 घण्टे की कोई भी परीक्षा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन करने में असफल है। यह एक सतत् प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों की रचनात्मकता, समस्या समाधान कौशल,आत्म–अभिव्यक्ति

की क्षमता का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। प्रश्नोत्तर विधि के साथ–साथ पोस्टर,चित्र,कविता,नृत्य को भी मूल्यांकन पद्धति में शामिल कर उनकी रचनात्मकता और भावनात्मक गहराई के आधार पर मूल्यांकन होना चाहिए।

तालिका– 2

परिकल्पना–द्वितीय–कला समावेशी शिक्षण–शिक्षक के सम्मुख चुनौतियाँ

प्रश्न संख्या	प्रश्न	विकल्प	संख्या	प्रतिशत	विशेष विवरण
1.	कला समावेशी शिक्षण के कियान्वयन में कौन–कौन सी समस्यायें एवं चुनौतियाँ आती है?	पर्याप्त संसाधनों का अभाव	29	58	N=50
		शिक्षक प्रशिक्षण में कमी	16	32	
		समय की कमी	19	38	
		छात्रों के सहयोग की कमी	18	36	
		अन्य	05	10	

शोध की द्वितीय परिकल्पना में इस प्रकिया के कियान्वयन में आने वाली चुनौतियों की विस्तृत विवेचना की गई है जिनका निवारण कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

- **पर्याप्त प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी :–** अध्ययन के विश्लेषण में पाया गया कि शिक्षकों में कला समावेशन शिक्षण के सिद्धातों और तकनीकों की पर्याप्त जानकारी का अभाव है। वर्तमान शिक्षा को ज्ञान सम्प्रेषण तक ही सीमित कर दिया गया है। कला को केवल एक विषय के रूप में ही पढाया जाता है तथा उनका प्रयोग शिक्षण प्रक्रिया के रूप में सीमित मात्रा में किया जाता है। यह निराशापूर्ण एवं चिन्ताजनक है कि इस पद्धति का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण का पूर्णतः अभाव है। लगभग सभी शिक्षकों ने प्रशिक्षण के अभाव की बात की। पारंपरिक शिक्षण दृष्टिकोण से बदलाव की कठिनाई ने इस शिक्षण के कियान्वयन में अवरोध उत्पन्न कर दिया है।
- **समय की कमी तथा पाठ्यक्रम को पूरा करने का दबाबः–** अध्ययन में शोधकर्ता ने पाया कि सत्र में शिक्षक का पूरा ध्यान पाठ्यक्रम को पूर्ण कराने में होता है। कला का प्रयोग करने का कोई प्रावधान या सुविधा समय सारिणी में विद्यालय स्तर पर उपलब्ध नहीं करायी जाती है। शिक्षक पर्याप्त समय के अभाव में पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने में पारंपरिक प्रणाली में ही सहज महसूस करता है तथा पुराने दायरे से बाहर आने के लिए भी ज्यादा प्रोत्साहित नहीं होता है।
- **उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों में इस प्रक्रिया को लेकर उदासीनता :–** अधिकांश शिक्षक पारंपरिक विधि के अभ्यस्त हो चुके हैं,जो मुख्य रूप से पाठ्य पुस्तक को केन्द्र में रख कर आज भी व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग प्रायः करते हैं जिस पारंपरिक शिक्षण पद्वति से उन्होने 25 वर्ष पूर्व शिक्षा ग्रहण की थी,बिना यह समझे कि इतने वर्षों के अन्तराल में वैश्विक स्तर पर शिक्षा के उद्देश्य,लक्ष्य तथा शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तनों के एक नये युग का आरम्भ हो चुका है। नवीन प्रक्रिया के प्रति उनका रूझान कम है तथा वे अपने सुविधाजनक माहौल से बाहर निकलना ही नहीं चाहते हैं।
- **शिक्षण सामग्री और संसाधन में कमी :–**अध्ययन में पाया गया कि अभी भी विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों ही कला समावेशी शिक्षक प्रक्रिया से अनभिज्ञ हैं, "उनका दृष्टिकोण अभी भी सीमित" है तथा यह स्थिति और अधिक खराब हो जाती है जब विद्यालयों में शिक्षण सामग्री तथा संसाधनों का अभाव होता है। यदि कला समावेशी प्रक्रिया को गंभीरता से लागू करना है तो पाठ्यक्रम में

आवश्यक बदलाव लाने के साथ–साथ कला सामग्री,संगीत उपकरण, अतिरिक्त स्टाफ की व्यवस्था करनी होगी तथा करके सीखने पर अधिक जोर दिये जाने की आवश्यकता है।

- **बहु–विषयक शिक्षक के सहयोग की आवश्यकताः–** अध्ययन में शिक्षकों ने साक्षात्कार में बताया कि विभिन्न शिक्षकों के आपसी सहयोग से ही मुख्य विषय के साथ कला को समेकित किया जा सकता है। सभी को एक साथ एक समय पर एकत्रित करना चुनौतीपूर्ण है। शिक्षक कला की विधाओं में भी निपुण नहीं होते हैं, अतः कक्षा में विविध आवश्यकताओं को पूरा करना चुनौती पूर्ण है। विद्यालयों में कला, संगीत विषय के शिक्षक न होने के कारण भी यह समस्या और भी जटिल हो जाती है।
- **विद्यार्थियों में उदासीनता :–** सभी विद्यार्थी कला में समान रूप से रूचि नहीं रखते हैं तथा पारंपरिक शिक्षा प्रक्रिया में ही सहज महसूस करते हैं। विद्यार्थियों की अधिक संख्या होने के कारण उन पर व्यक्तिगत ध्यान देना भी कठिन हो जाता है। हर विद्यार्थी की अलग–अलग रूचि,सीखने की गति और शैली में अन्तर हो सकता है,जिससे यह प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। किसी की रूचि दृश्य एवं श्रवण शिक्षण में रूचि हो सकती है,अतः उनकी शैली की पहचान कर उनके अनुरूप पाठ योजना तैयार करने में अनेक चुनौतियों की सामना करना पडता है।
- **वित्तीय बाधायें :–** स्कूल के पास पर्याप्त बजट सामग्री खरीदने, कार्यशालायें आयोजित करने और बाहरी विषेशज्ञों को आमंत्रित करने के लिए नहीं होती हैं।
- स्थानीय समुदाय और अभिभावकों के मानस पटल पर अभी भी पारंपरिक शिक्षण प्रक्रिया की ही छाप है। और उनकी तरफ से सहयोग की संभावनायें भी कम नजर आती हैं।

तालिका–3

परिकल्पना तृतीय–कला समावेशी शिक्षण एवं संभावित समाधान तथा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

प्रश्न संख्या	प्रश्न	विकल्प	संख्या	प्रतिशत	विशेष विवरण
1.	क्या आपके विद्यालय में कला समावेशी शिक्षण का अधिकारिक प्रशिक्षण या कार्यशाला आयोजन किया जाता है?	हाँ	18	36	N=50
		नहीं	06	12	
		कभी–कभी	26	52	
2.	कला समावेशी शिक्षण के प्रभाव को बढ़ाने के लिए विद्यालय में क्या सुधार किये जा सकते हैं?	आनन्दमयी एवं अनुकूल वातावरण	50	100	
		समय सारिणी में सुधार	45	90	
		प्रशिक्षण	50	100	
		कला विधाओं का विविवत प्रयोग	50	100	
3.	क्या कला समावेशी शिक्षण अधिक प्रशिक्षण और संसाधनों के लिए इच्छुक हैं?	हाँ	36	72	
		नहीं	09	18	
		हो सकते हैं।	05	10	
4.	कला समावेशी शिक्षण शैली से आपकी शिक्षण शैली में कौन से महत्त्वपूर्ण बदलाव आयें हैं?	रूचिकर	21	42	
		प्रभावशाली	12	24	
		अन्य	17	34	
5.	क्या आप कला समावेशी शिक्षण को अन्य विद्यालयों में लागू करने की सिफारिश करेगें।	हाँ	48	96	
		नहीं	02	04	
6.	कला समावेशी शिक्षण का सही और प्रभावी कार्यान्वयन किस किया जा सकता है?	कार्यशाला	16	32	
		वाद–विवाद	10	20	
		बच्चों को अवसर	08	16	
		अन्य	16	32	

7.	कला समावेशी शिक्षण को कक्षा में प्रभावी बनाने की प्रमुख विधियॉ/तकनीकें क्या है?	परियोजना आधारित कार्य	33	66	
		समूह चर्चाएँ एवं गतिविधियॉ	35	70	
		खेल एवं शारीरिक गतिविधियॉ	12	24	
		दृश्यात्मक शैक्षिक सामग्री	36	72	
		अन्य	01	02	

❖ **तृतीय परिकल्पना–** शिक्षण प्रक्रिया की चुनौतियों के संभावित समाधानः–

- शोध संर्वेक्षण में यह संज्ञान में आया कि शिक्षण हेतु एक ऐसा वातावरण हो जो सभी के लिए सहायक सुरक्षित,प्रेरक हो जहाँ विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थी भी अपना संर्वागीण विकास करने में सक्षम हो सकें। संभावित समाधानों में सबसे मुख्य शिक्षण हेतु प्रशिक्षण का आयोजन करना था। समय–समय पर प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन होना चाहिए।

इस शिक्षा प्रणाली को स्मार्ट शिक्षक,समर्पित,शिक्षिकीय संशाधन और आधुनिक शिक्षा साधनों के साथ सम्बन्धित रचनात्मकता विकसित करने के लिए सकारात्मक शिक्षण प्रक्षिशण की आवश्यकता होती है। bkumarauthor.wordpres.com 22 जनवरी 2025[20]

- बाल केन्द्रित शिक्षण पद्धति को नीतियों में शामिल कर इसे प्रशासन द्वारा सख्ती से लागू किया जाना चाहिए ताकि पारंपरिक शिक्षण पद्धति से बाहर आया जा सके।
- पाठ्यक्रम प्रबन्धन पर भी विशेष ध्यान देकर इसमें कला समायोजन के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए। पठन तथा सहगामी क्रियाओं को भी महत्त्व देते हुए समूह चर्चायें,खेल,शारीरिक गतिविधियाँ,वाद–विवाद कार्यशालाओं का भी आयोजन होना चाहिए।
- समय योजना इस प्रकार से बनाई जाये कि समय सारिणी में कला समावेशी क्रियाओं के क्रियान्वयन में कोई कठिनाई न हो।
- पर्याप्त बजट इस शिक्षण प्रक्रिया के लिए बनाया जाये ताकि वित्तीय बाधाओं को दूर कर कला सामग्री आदि उपलब्ध कराई जा सके।
- कला सवामेशी शिक्षण के प्रति अभिभावकों तथा स्थानीय समुदायों को भी जागरूक बनाया जाये तथा उनसे यथा सम्भव सहयोग प्राप्त किया जायें।

❖ **अध्ययन की प्रासंगिकता :–**

शिक्षक कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया के संचालक,मार्गदर्शक एवं संयोजक है। शिक्षक प्रोत्साहन और प्रेरणा के असाधारण स्रोत हैं। आदर्श शिक्षक ज्ञान का हस्तान्तरण मात्र न कर एक सकारात्मक सहायक तथा आंनदमयी शिक्षण का वातावरण बनाता है जो विद्यार्थियों के अनुभव और परिणामों को आकार देता है, अतः शिक्षक ही इसकी आधारशिला हैं। यह शोध अध्ययन इस अध्ययन की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है क्यों कि कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की नयी परिभाषायें तथा भूमिकाओं को समाहित किये हैं, जो शिक्षा के उद्देश्य तथा विद्यार्थियों के संर्वागीण विकास की ओर उन्मुख हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए अनुकूल वातावरण बनाकर सीखने को रोचक तथा कला की विद्याओं का मार्गदर्शन कर,अपनी दक्षता का प्रयोग करके कला समावेशन कर शिक्षण और अभिव्यक्ति के अवसर देता है।इसके क्रियान्वयन में उनके समक्ष अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ तो हैं किन्तु ऐसा नहीं है कि इन समस्याओं के समाधान सम्भव नहीं हैं। यह शोध अध्ययन सम–सामयिक,वैश्विक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिर्वतनों के सन्दर्भ में इस शिक्षण की प्रासंगिकता तथा शिक्षक की नयी भूमिका को सिद्ध करता है।

❖ निष्कर्षः–

शिक्षा की सफलता केवल विषय वस्तु के संप्रेषण पर नहीं, अपितु उसकी शिक्षण प्रक्रिया की संवेदनशीलता, समावेशिता एवं सृजनशीलता पर निर्भर करती है,जिसका कला समावेशी शिक्षण प्रक्रिया सर्वोत्तम विकल्प है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि यह शिक्षण का सशक्त माध्यम है जो कक्षा का वातावरण जीवन्त, आनंदमय बनाता है,माध्यमिक विद्यालयों में कला समावेशी शिक्षण के सफल क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका निर्णायक एवं परिवर्तनकारी है,जो केवल ज्ञान न देकर मार्गदर्शक,सहयोगी एवं प्रेरणा स्रोत बन विद्यार्थियों में कलात्मक जिज्ञासा,सामाजिक संवेदना और सौन्दर्य बोध को निखारते हैं। शोध अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों द्वारा कुछ चुनौतियों तथा समाधानों जैसे समावेशी शिक्षण की अनिवार्यता,शिक्षण तकनीकों को लागू करना,संसाधनों की उपलब्धता,कार्यशालाओं का आयोजन,पाठ्यक्रम का लचीलापन, प्रशासन एवं स्थानीय समुदायों की संवेदनशीलता,मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन का भी विश्लेषण किया गया तथा पाया गया कि जब तक शिक्षक मानसिक रूप से सशक्त,दृढ इच्छा शक्ति,दृढ संकल्प,नैतिक ईमानदारी एवं शिक्षण में नवाचार के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होंगे तब तक यह केवल एक औपचारिक प्रयोग मात्र रह जायेगा।एक जागरूक, प्रशिक्षित शिक्षक ही एक मार्गदर्शक के रूप में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सम्भव बना सकता है।

❖ सन्दर्भ सूची–

1- संवाद–पृष्ठ सं0 04 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के सन्दर्भ में शिक्षक हस्तपुस्तिका, सर्व शिक्षा अभियान,लखनऊ,उत्तर प्रदेश।

2- कीर स्टार्मर–14 मार्च 2024 लेबर क्रियेटिव कॉफेंस–प्रधानमंत्री ने अपने भाषण के दौरान कला और रचनात्मकता शिक्षण प्रणाली में केन्द्रीय स्थान देने की प्रतिबद्धता जताई। रचनात्मकता नये अविष्कार,विचार और समाधान का मूल है। theartnewspaper.com14 march 2024 by alexander morrison।

3- अल्वर्ट आइंस्टाईन-Quotescosmos

4- संवाद–पृष्ठ सं0 06 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के सन्दर्भ में शिक्षक हस्तपुस्तिका,सर्व शिक्षा अभियान,लखनऊ,उत्तर प्रदेश

5- UNESCO Delore Commission-2022 Learning The Treasure Within, 4 Pillars Of Education .UNESCO,1996,review-educationforallinindia.com by R.P.Singh journal of educational planning and administration,NIEPA 2 april 1999 new delhi

6- राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र के दिशा निर्देश (पृष्ठ सं0–7–8, एन0सी0ई0आर0टी)

7- संवाद–पृष्ठ सं0 40 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के सन्दर्भ में शिक्षक हस्तपुस्तिका,सर्व शिक्षा अभियान,लखनऊ,उत्तर प्रदेश

8- संवाद–पृष्ठ सं0 49 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के सन्दर्भ में शिक्षक हस्तपुस्तिका,सर्व शिक्षा अभियान,लखनऊ,उत्तर प्रदेश

9- UNESCO Delore Commission-2022 Learning The Treasure Within, 4 Pillars Of Education .UNESCO,1996, review-educationforallinindia.com by R.P Singh journal of educational planning and administration,NIEPA 2 april 1999 new delhi

10- UNESCO Seoul Agenda-2010:-The Second World Conference On Arts Education.makiokawashima 03-26-2022 Art e learning centre(japan)www.5pbiglobe.ne.jp

11- हस्तपुस्तिका,सर्व शिक्षा अभियान, लखनऊ,उत्तर प्रदेश,राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में "शिक्षक की भूमिका"अध्याय 5 और "हमारी कक्षा" अध्याय 3 कला सवावेशी शिक्षण में शिक्षको की भूमिका पर चर्चा की गई है।

12- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पृष्ठ–18 प्रायोगिक अधिगम education.gov.in

13- Harward University-HPZ.project zero features in edutopia 11-09-2012 by news editor gse.harward.edu.harward school of education
14- ncert.nic.in
15- हेडंसरसन लैसली–2014 पृष्ठ सं0–7 कला में समावेशी शिक्षा,लिथुआनिया में चुनौतियॉ अभ्यास और अनुभव–एडिटा मुस्नेकीने,मैट्स जॉनसन–6.10.2020 etenenjournal-com.translate.goog
16- 21.05.2020 www-wgu.edu.translate.goog
17- बुद्विमता सबके लिए समान क्यो नही है?–क्रेंडा चेरी, 29.01.2025 www-verywellmind.com.translate.goog
18- David Kolb(1984).कोल्ब की सीखने की शैलियॉ और अनुभवात्मक सीखने का चक्र–द्वारा सॉल मैकलियोड,19.03.2025 www-simplypsychologi-org.translate.goog
19- कला में समावेशी शिक्षा,लिथुआनिया में चुनौतियॉ अभ्यास और अनुभव–एडिटा मुस्नेकीने,मैट्स जॉनसन–6.10. 2020 etenenjournal-com.translate.goog
20- bkumarauthor.wordpres.com 22जनवरी 2025

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता

***डॉ.पुष्पेन्द्र सिंह**

शोधसार

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के उद्देश्य, संरचना और दृष्टिकोण में एक व्यापक परिवर्तन का संकेत देती है, जिसमें समग्र विकास, नैतिक मूल्यों, मानसिक स्वास्थ्य, और समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। यह दृष्टिकोण उस बौद्ध शिक्षा दर्शन से गहराई से मेल खाता है, जो प्रज्ञा (ज्ञान), शील (नैतिकता) और समाधि (मानसिक अनुशासन) पर आधारित है।

बौद्ध धर्म का मूल संदेश करुणा, अहिंसा, आत्मनिरीक्षण और सम्यक दृष्टि है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास को प्रेरित करता है, बल्कि एक शांतिपूर्ण व समरस समाज के निर्माण में भी सहायक होता है। यह शोध–पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि किस प्रकार बौद्ध शिक्षण सिद्धांतों को NEP 2020 की प्राथमिकताओं के साथ जोड़ा जा सकता है, और किस प्रकार बौद्ध दृष्टिकोण से आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली को और अधिक नैतिक, समावेशी और मानसिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है।

शोध में यह दर्शाया गया है कि NEP 2020 द्वारा प्रस्तावित माइंडफुलनेस, मूल्य–आधारित शिक्षा, बहु–विषयक दृष्टिकोण और सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा बौद्ध शिक्षा के मूल तत्त्वों से प्रेरणा ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, विपश्यना ध्यान विद्यार्थियों में आत्मनियंत्रण, एकाग्रता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित कर सकता है, वहीं पंचशील और अष्टांगिक मार्ग जैसे नैतिक सिद्धांत नैतिक शिक्षा के ठोस आधार बन सकते हैं।

बौद्ध भिक्षु संघ की संरचना समानता, अनुशासन और लोकतांत्रिक सहभागिता का मॉडल प्रस्तुत करती है, जिसे समावेशी शिक्षा और समान अवसर के संदर्भ में NEP 2020 में अपनाया जा सकता है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए करुणा आधारित शिक्षण दृष्टिकोण बौद्ध मत की सामाजिक न्याय की अवधारणा से जुड़ता है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि यदि शिक्षा प्रणाली में करुणा, आत्मचिंतन और नैतिक शुचिता जैसे बौद्ध मूल्य समाहित किए जाएँ, तो शिक्षा केवल सूचना का हस्तांतरण न रहकर, चरित्र निर्माण, सामाजिक समरसता और वैश्विक शांति की दिशा में एक सशक्त साधन बन सकती है। इस समन्वयात्मक दृष्टिकोण से यह शोध समकालीन शिक्षा में बौद्ध सिद्धांतों के प्रासंगिक योगदान को रेखांकित करता है।

कीवर्ड : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बौद्ध शिक्षा दर्शन, नैतिक शिक्षा, करुणा, शांति, सामाजिक न्याय

प्रस्तावना :–

भारत की शिक्षा प्रणाली सदियों से आध्यात्मिकता, नैतिकता, और ज्ञान की गहराई से जुड़ी रही है। वैदिक गुरुकुलों से लेकर नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों तक, भारतीय शिक्षा में ज्ञान केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं था, बल्कि यह आत्मविकास, सामाजिक उत्तरदायित्त्व और सार्वभौमिक करुणा की ओर एक यात्रा थी। समय के साथ शिक्षा में व्यावसायिकता, प्रतियोगिता और मानसिक तनाव का समावेश हुआ, जिससे मूल मानवीय मूल्य पीछे छूट गए।

इसी संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल के रूप में देखा गया है। यह नीति न केवल पाठ्यचर्या और पद्धतियों में परिवर्तन का प्रस्ताव देती है, बल्कि शिक्षा को समग्र, नैतिक, और समावेशी बनाने पर भी बल देती है। इसमें शांति, करुणा, समावेशन, नैतिकता जैसे तत्त्वों का उल्लेख स्पष्ट रूप से मिलता है।

*****सहायक अध्यापक ,संविलियन विद्यालय समामई, सासनी, हाथरस, 9759759525 Email:- Drpushpendraji@gmail.com

इन सभी मूल्यों का गहरा नाता बौद्ध शिक्षा दर्शन से है, जो 2500 वर्षों से अधिक समय से एशिया समेत विश्व के अनेक भागों में मानवता की दिशा में कार्य कर रहा है। बुद्ध का मार्ग प्रज्ञा (ज्ञान), शील (नैतिकता) और समाधि (मानसिक अनुशासन) एक ऐसी शिक्षण प्रणाली का प्रस्ताव करता है जो केवल सूचना ही नहीं, बल्कि जागरूकता, आत्मनियंत्रण और सामूहिक कल्याण की शिक्षा देता है।

समस्या का प्रतिपादन

आज की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक असमानता, और नैतिक शून्यता गंभीर समस्याएँ हैं। प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण, मात्र अंकों पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली, और जीवन कौशल की अनुपस्थिति से शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से भटकती प्रतीत होती है। NEP 2020 ने इन चिंताओं को समझते हुए शिक्षा को मानवीय दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास किया है, परंतु क्या इसके लिए कोई दार्शनिक और सांस्कृतिक आधार है?बौद्ध दृष्टिकोण, विशेष रूप से करुणा, शांति, और सम्यक दृष्टि जैसे तत्त्वों में इन समस्याओं का समाधान निहित हो सकता है। ऐसे में, NEP 2020 का मूल्यांकन बौद्ध शिक्षा दर्शन के आलोक में करना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है।

उद्देश्य. इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है:

1. NEP 2020 और बौद्ध शिक्षा दर्शन के मूल्यों के मध्य सामंजस्य की पहचान करना।

2. यह विश्लेषण करना कि बौद्ध दर्शन किस प्रकार NEP 2020 के शांति, करुणा और समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को गहराई प्रदान कर सकता है।

शोध की आवश्यकता :–

NEP 2020 को सफल बनाने के लिए केवल संरचनात्मक परिवर्तनों से अधिक की आवश्यकता है। उसमें प्रस्तावित नैतिकता, समावेशन और मानसिक कल्याण जैसे पहलुओं को आध्यात्मिक–दार्शनिक आधार मिलना आवश्यक है। बौद्ध शिक्षा दर्शन भारत की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा हुआ ऐसा आधार प्रस्तुत करता है, जो इन मूल्यों को न केवल सैद्धांतिक रूप से, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी समृद्ध कर सकता है।विशेष रूप से वर्तमान समय में, जब युवा वर्ग अवसाद, क्रोध, असहिष्णुता और उद्देश्यहीनता से जूझ रहा है, तब विपश्यना, सम्यक आचरण, सम्यक संकल्प और सम्यक दृष्टि जैसी बौद्ध अवधारणाएँ विद्यार्थियों में आंतरिक स्थिरता, संवेदनशीलता और बौद्धिक संतुलन उत्पन्न कर सकती हैं।

समीक्षा की स्थिति :–

NEP 2020 पर विभिन्न समीक्षकों ने इसकी नवाचारपरक नीतियों की सराहना की है, जैसे कि बहुविषयकता, मातृभाषा में शिक्षा, और मूल्यों पर आधारित पाठ्यचर्या। वहीं, बौद्ध शिक्षा पर लिखे गए ग्रंथों में Rahula (1974)$_1$, Nhat Hanh (1999)$_{2,6}$ और Dalai Lama (2001)$_3$ने शिक्षण को करुणा, ध्यान और नैतिकता से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया है। परंतु इन दोनों क्षेत्रों को समन्वित रूप से देखने का प्रयास अत्यंत अल्प है, जो इस शोध को विशेष बनाता है।

शोध की सीमा :–

यह अध्ययन मुख्यतः NEP 2020 की नैतिक, मानसिक और समावेशी शिक्षा संबंधी प्रावधानों पर केन्द्रित है। इसमें बौद्ध शिक्षा के दार्शनिक और व्यावहारिक पहलुओं की समीक्षा की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक अवलोकन :–

भारत की नवीनतम शिक्षा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020$_{4,5}$ 34 वर्षों के लंबे अंतराल के पश्चात लाई गई है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को न केवल अधिक लचीला और बहु–विषयक बनाना है, बल्कि नैतिकता, समावेशिता,

करुणा और शांति जैसे मानवीय मूल्यों को भी केन्द्रीय बनाना है। यह नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का उत्तर देने के लिए तैयार की गई है, जिसमें केवल आर्थिक उत्पादकता नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, मानसिक स्वास्थ्य और समाज–सापेक्ष शिक्षा पर बल दिया गया है। NEP 2020 न केवल शैक्षणिक संरचना को नया रूप देती है, बल्कि शिक्षण की विधियों, भाषा नीति, शिक्षक प्रशिक्षण और मूल्यांकन प्रणाली में भी व्यापक बदलाव का प्रस्ताव करती है। नीति में दिए गए कई पहलू बौद्ध दर्शन के आदर्शों के साथ गहरे सामंजस्य में हैंजैसे सम्यक दृष्टि, सम्यक आचरण,बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग, पंचशील करुणा और ध्यान।

बौद्ध शिक्षा दर्शन शांति, करुणा और समावेशन का आधार :–

बौद्ध शिक्षा दर्शन का मूल उद्देश्य है दुःख से मुक्ति पाकर सम्यक ज्ञान, नैतिक आचरण और मानसिक अनुशासन के माध्यम से संपूर्ण मानव कल्याण की दिशा में अग्रसर होना। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित शिक्षा किसी धर्म विशेष के अनुशासन से परे, मानव अनुभव पर आधारित सार्वभौमिक दृष्टिकोण है। आज जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 करुणा, नैतिकता और समावेशन को शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है, तब बौद्ध शिक्षा दर्शन उसका मार्गदर्शक बन सकता है।बौद्ध परंपरा में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि आत्म–शुद्धि, संतुलन, और लोककल्याण का माध्यम रही है। यह अध्याय इसी मूल दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है, जिसमें शांति, करुणा और समावेशन को केन्द्रीय आधार बनाया गया है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन तीन स्तंभों पर आधारित है जिन्हें त्रिशिक्षा कहा गया हैः

1 प्रज्ञा–सत्य की खोज, विवेकपूर्ण चिंतन और आत्मनिरीक्षण से जुड़ा यह पक्ष विद्यार्थियों को केवल सूचना नहीं, बल्कि ज्ञान के सार तक पहुँचने की प्रेरणा देता है।यह सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प के रूप में प्रकट होता है।

2 शील– बौद्ध शिक्षा का नैतिक पक्ष, जो विद्यार्थी के आचरण, व्यवहार और सामाजिक दायित्त्व को निर्धारित करता है। इसमें पंचशील का विशेष महत्व है।

3 समाधि–ध्यान, अनुशासन और आत्म–नियंत्रण की शिक्षा जो आंतरिक शांति, एकाग्रता और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करती है।

अष्टांगिक मार्गः समग्र विकास की शिक्षा

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टांगिक मार्ग शिक्षा की समग्रता को दर्शाता हैः

1. **सम्यक दृष्टि**– विवेकपूर्ण सोच और आलोचनात्मक दृष्टिकोण।
2. **सम्यक संकल्प**– करुणा और सह–अस्तित्त्व की भावना।
3. **सम्यक वाक्**–सत्य और अहिंसक संवाद।
4. **सम्यक कर्मान्त**– नैतिक क्रिया और दायित्त्वबोध।
5. **सम्यक आजीविका**– नैतिक और न्यायपूर्ण जीविका का चयन।
6. **सम्यक प्रयास**– सतत आत्म–सुधार और समर्पण।
7. **सम्यक स्मृति**–सतर्कता, जागरूकता, आत्मनिरीक्षण।
8. **सम्यक समाधि**– एकाग्रता और मानसिक संतुलन।

यह मार्ग विद्यार्थियों के मस्तिष्क, हृदय और व्यवहार के तीनों स्तरों पर विकास की बात करता है, जो NEP 2020 समग्र विकास की भावना से मेल खाता है।

पंचशील और नैतिक शिक्षा :–

बौद्ध धर्म के पंचशील

1. प्राणियों की हिंसा से बचना
2. चोरी न करना
3. कामुक दुराचार से बचना
4. असत्य वचन से बचना
5. नशीले पदार्थों से दूर रहना

ये सभी नैतिक शिक्षा के अत्यंत प्रभावशाली सूत्र हैं, जिन्हें NEP 2020 में प्रभावी रूप से अपनाया जा सकता है। ये पाँच नियम समाज में शांति, अनुशासन और विश्वास का निर्माण करते हैं।

करुणाः शिक्षा की आत्मा :–

करुणा बौद्ध दर्शन का हृदय है। यह केवल दया नहीं, अपितु सक्रिय भाव से दूसरे के दुःख को दूर करने का प्रयास है। NEP 2020 में ''Empathy'', ''Emotional Intelligence'' और ''Socio&Emotional Learning'' जैसे पहलू इस करुणा के ही आधुनिक रूप हैं।

करुणा आधारित शिक्षण विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता, परस्पर सहयोग और संवेदनशील नेतृत्त्व को प्रोत्साहित करता है।

शिक्षक यदि करुणा का व्यवहार अपनाएँ, तो कक्षा का वातावरण अधिक स्वीकार्य और प्रेरणात्मक बनता है।

समावेशन और समानता की बौद्ध दृष्टि :–

बौद्ध संघ की रचना जाति, वर्ग, लिंग और जन्म के भेदभाव से परे थी।

बुद्ध ने अछूतों को भिक्षु बनाया, महिलाओं के लिए संघ की स्थापना की।

शिक्षा सभी के लिए सुलभ थी, चाहे वे राजा हों या भिक्षु।

यह दृष्टिकोण NEP 2020 में समावेशी शिक्षा, लैंगिक समानता और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए समान अवसरों की नीति से गहराई से मेल खाता है।

ध्यान और शांति शिक्षा :–

बौद्ध ध्यान विशेषतः विपश्यना और अनापान, मानसिक स्पष्टता, संतुलन और आत्म–नियंत्रण विकसित करने की प्रक्रिया है। आज की शिक्षा मेंः

तनाव प्रबंधन

विद्यार्थियों की एकाग्रता

आत्म–जागरूकता

मानसिक स्वास्थ्य

इन सभी में माइंडफुलनेस की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो गई है। NEP 2020 में इसे शिक्षा का नियमित भाग बनाने की बात की गई है।

शांति का मार्गः शिक्षा से समाज तक

शिक्षा बौद्ध परंपरा में सामाजिक परिवर्तन का माध्यम रही है।

बुद्ध के विचारों ने युद्धग्रस्त समाज को संवाद, शांति और करुणा के मार्ग पर लाया।

अशोक जैसे सम्राट ने इसे अपनाकर नीतिशास्त्र और जननीति का मार्ग बदल दिया।

इसी प्रकार, यदि आज की शिक्षा बौद्ध दर्शन की आत्मा ''शांति भीतर से प्रारंभ होती है'' को अपनाए, तो यह विद्यालय से शुरू होकर राष्ट्र और वैश्विक समाज तक परिवर्तन ला सकती है।

तुलनात्मक अध्ययनः NEP 2020 बनाम बौद्ध दृष्टिकोण

विषय	**NEP 2020**	**बौद्ध शिक्षा दर्शन**
नैतिक शिक्षा का उद्देश्य	चरित्र निर्माण, मूल्य बोध	आत्म–शुद्धि, सम्यक आचरण
प्रमुख तत्त्व	सहिष्णुता, सह–अस्तित्व, सत्यनिष्ठा	पंचशील, अष्टांगिक मार्ग, करुणा
अनुप्रयोग आधारित शिक्षण	प्रोजेक्ट आधारित मूल्य शिक्षा	ध्यान, स्मृति साधना, कथा व अनुभव
शिक्षक की भूमिका	मूल्य संप्रेषक व आदर्श व्यक्तित्त्व	आचार्य जो स्वयं शीलवान हो
सीखने का तरीका	गतिविधि आधारित, चर्चा व अनुभव	निरीक्षण, आत्मचिंतन, अनुशासन

यह तुलना स्पष्ट करती है कि बौद्ध शिक्षा दर्शन NEP 2020 के नैतिक उद्देश्यों को और भी अधिक गहराई और आध्यात्मिकता प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष :–

बौद्ध शिक्षा दर्शन आज की शिक्षा व्यवस्था के लिए एक नैतिक, समावेशी और शांतिपूर्ण विकल्प प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना ''शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, चरित्र निर्माण है'' बौद्ध दृष्टिकोण के साथ सहज रूप से जुड़ती है। यदि त्रिशिक्षा, अष्टांगिक मार्ग, पंचशील, करुणा और ध्यान जैसे सिद्धांतों को आधुनिक पाठ्यक्रम में समाहित किया जाए, तो यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाएगा, बल्कि समाज को भी अधिक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और समावेशी बना सकेगा।

बौद्ध नैतिक दृष्टिकोण NEP 2020 के नैतिक शिक्षा संबंधी उद्देश्यों को ना केवल पुष्ट करता है, बल्कि उसे एक गहराई और अनुभवधर्मिता भी प्रदान करता है। शील, करुणा, और समाधि जैसे सिद्धांत केवल आदर्श नहीं, व्यावहारिक मार्गदर्शन भी हैं। यदि इन्हें शिक्षा व्यवस्था में समाहित किया जाए, तो हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकते हैं जो ज्ञानवान ही नहीं, नैतिक रूप से जागरूक, संवेदनशील और समर्पित होगी।

बौद्ध दृष्टिकोण में शिक्षक मात्र ज्ञानदाता नहीं, धम्मदूत (धर्म के दूत) होता है। वह अपने आचरण, करुणा, धैर्य और उदाहरण द्वारा शिक्षण करता है। NEP 2020 में भी शिक्षक प्रशिक्षण, संवेदनशीलता और प्रेरणा पर बल दिया गया है। यदि शिक्षकों को बौद्ध साधना और मूल्यबोध से समृद्ध किया जाए, तो वे "न केवल पढ़ाएँगे, बल्कि विद्यार्थियों के जीवन में उजास भरेंगे।"

भविष्य की ओर दृष्टि :–

यदि भारत शिक्षा को केवल प्रतिस्पर्धा, कौशल और तकनीकी दक्षता तक सीमित रखेगा, तो वह भौतिक उन्नति तो पाएगा, लेकिन मानवीय मूल्य खो देगा। वहीं, यदि हम बौद्ध शिक्षा दर्शन जैसे प्राचीन और गहरे परिपक्व ज्ञान–स्रोत को समाविष्ट करें, तो हम अधुनिकता और अध्यात्म का संतुलन प्राप्त कर सकते हैं।NEP 2020 इस दिशा में पहला कदम है और यह शोध इस बात की पुष्टि करता है कि बौद्ध दृष्टिकोण से इसमें गहराई, संवेदना और दिशा जोड़ी जा सकती है।

बुद्ध ने कहा था

"यो धम्मं पश्यति, सो मां पश्यति।"

(जो धम्म को देखता है, वह मुझे देखता है।)

धम्म यानि सत्य, करुणा, समता, जागरूकता और नैतिकता। यही आज शिक्षा को भी चाहिए। NEP 2020यदि इन मूल्यों को बौद्ध दृष्टिकोण से समझे और आत्मसात करे, तो भारत का शैक्षिक भविष्य न केवल उज्ज्वल, बल्कि शांति और करुणा से ओतप्रोत होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Rahula, W. (1974). What the Buddha Taught. Grove Press. pp. 45–62
2. Nhat Hanh, T. (1999). The Heart of the Buddha's Teaching. Broadway Books. (p. 122–135)
3. Dalai Lama. (2001). Ethics for the New Millennium. Riverhead Books. pp. 143–160
4. Ministry of Education. (2020). NEP 2020. Government of India. (p. 33–37)
5. Ministry of Education. (2020). NEP 2020. Government of India. pp. 5–42
6. Nhat Hanh, T. (1999). The Heart of the Buddha's Teaching. Broadway Books. pp. 80–101

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

Embedding Value Education in India's Educational Framework: A Critical Analysis of NEP 2020 Reforms

**Shikha Verma*
***Dr. Reena Agarwal*

ABSTRACT

This paper critically examines the integration of value education within the framework of India's National Education Policy (NEP) 2020, highlighting its transformative impact across various levels of education. It explores how NEP 2020 aims to address the moral and ethical decline among youth by embedding core human values such as empathy, integrity, respect, and responsibility into the curriculum from foundational schooling to higher education. The study analyzes key policy reforms in areas including school education, higher education, inclusive practices, vocational training, teacher education, and skill development. Drawing upon both contemporary research and foundational theories, the paper demonstrates that NEP 2020 promotes a holistic, experiential, and multidisciplinary approach, ensuring not only academic competence but also moral growth. It emphasizes the vital role of educators, inclusive pedagogy, and skill-based learning in fostering ethical, socially responsible citizens. The paper concludes that NEP 2020 represents a forward-looking educational model that blends traditional Indian values with modern pedagogical practices to build an inclusive, and progressive society.

Keywords: *NEP2020, Value Education, Holistic Development.*

INTRODUCTION :-

Values serve as the foundation for shaping individuals' thoughts, behaviors, and decisions, significantly impacting their attitudes and perceptions. As core societal beliefs, values are instrumental in guiding ethical behavior and supporting long-term personal development. They play a key role in influencing learning methodologies and academic success by encouraging responsible and well-informed choices (Gamage et al., 2021). Values are essential principles or standards and regarded as significant in human life. They can be intrinsic, such as love, empathy, compassion, mercy, and kindness, or cultivated through consistent practice, including traits like discipline, punctuality, obedience, and good conduct. These principles form the moral and existential core of human life (Radha, 2016).

According to the Universal Human Values framework, value education should be grounded in universally acceptable, rational, and evidence-based principles. It must promote inclusivity and societal harmony (Universal Human Values Handout 1, Introduction to Value Education).

From a psychological perspective, an individual's development depends on both heredity and environment. The environment includes home, school, and society, all of which shape growth and behaviour. Both genetic and environmental factors work together to influence overall development. Carbonilla et al. (2024) explore the challenges Values Education students face in applying their learnings to daily life. Socioeconomic pressures, peer influence, and societal norms hinder value integration. The study highlights the need for supportive educational environments and experiential learning to help students overcome barriers and practice values effectively.

*Research scholar, Department of Education, University of Lucknow, Uttar Pradesh, India, Mob.No. 8318771085, Email:- shikhaverma.1443@gmail.com
**Professor, Department of Education, University of Lucknow, Uttar Pradesh, India, Mob.No. 9415300615, Email:- reenaagarwal_lu@rediffmail.com

Today's education mainly teaches subjects like Physics, Chemistry, and History but does not focus on self-awareness and moral values. It prepares people for material success but often ignores kindness, honesty, and compassion. This can lead to selfishness and social problems. The current crisis of values is due to a gap between the ideals people claim to believe in and their actions, which often fail to match those ideals. This gap creates a lack of moral guidance. The vacuum created because the knowledge imparted in colleges, universities and school is predominantly theoretical, creating a disconnect between the theoretical foundations and practical applications, which are the two distinct aspects of knowledge (Peter, 1982). True education should balance knowledge with good values, encouraging patriotism, justice, and unity. Value education is important because it builds character, teaches discipline, and helps people understand right from wrong, creating a better and more ethical society.India's future growth trajectory will be shaped by a blend of its knowledge-driven values and the advancement of a skilled workforce (Bhattacharjee, 2024).

NEP 2020 emphasizes a dynamic pedagogy that fosters experiential, holistic, and inquiry-driven learning. It promotes flexibility, discussion-based education, and enjoyment while integrating arts, humanities, sports, languages, and values. The policy aims to build character, ethics, and compassion in learners while equipping them for meaningful and fulfilling careers. (NEP, 2020, pp. 3). This policy aims to transform India's education system by emphasizing holistic learning, critical thinking, and value-based education. It integrates traditional knowledge with modern skills for all around development of an individuals. The objective of NEP 2020 is to cultivate a spirit of service by embracing values such as honesty, kindness, sacrifice, truthfulness, and an altruistic commitment to justice, ultimately fostering a harmonious and prosperous society (Shelake, 2022).

The National Education Policy (NEP) 2020 marks a transformative shift in India's education system by placing significant emphasis on the integration of value education across all stages of learning.

School education: Schools play a vital role in shaping lifelong values in students. Mere inclusion of value education as a subject is insufficient; instead, well-structured curricular and co-curricular activities are essential to instill values effectively (Singh, 2023). Experiential learning fosters genuine understanding, promoting ethical and responsible behavior. Schools shape a child's moral foundation by fostering universal brotherhood, religious respect, national pride, and dignity of labor. Teaching self-reliance, empathy, and social responsibility ensures holistic development (Pramanik, 2018). These values cultivate responsible citizens, reinforcing equality and inclusivity in society. The NEP 2020 integrates ethical reasoning and traditional Indian values into education, fostering moral character and national identity. Channa et al., (2022) highlights that NEP 2020 emphasizes holistic education by integrating physical, cognitive, emotional, and spiritual growth. Schools must instill respect, self-discipline, and community service while fostering patriotism, democratic values, and religious harmony. By nurturing ethical reasoning and global solidarity, education empowers students to become responsible, value-driven citizens.

Higher education: Value education in higher education is crucial as it fosters moral and intellectual growth, leadership, social justice, and lifelong learning. It cultivates ethical reasoning, social responsibility, and personal excellence, preparing students to navigate complex societal challenges. Integrating values with education ensures holistic development, promoting integrity, harmony, and societal progress (Saroja, 2016). NEP 2020 fosters value-based higher education by integrating flexibility, research, critical thinking, and ethical development. It emphasizes globalization, technology, and faculty growth while promoting autonomy and quality assurance. These reforms nurture responsible, innovative, and globally competent individuals with integrity and adaptability (Gupta & Srivastava, 2024). NEP 2020 encourages multidisciplinary approach in higher education, fostering adaptability, creativity, and ethical learning. It also highlights the importance of academic honesty by promoting research integrity and originality while supporting innovative and flexible learning methods.

Inclusive education: Inclusive education plays a significant role in promoting value education by fostering recognition, freedom, and participation. According to Felder (2018), inclusion extends beyond mere physical presence in educational settings; it emphasizes social learning, belonging, and shared experiences. By integrating students with disabilities into mainstream education, inclusive practices cultivate empathy, respect, and acceptance, reinforcing human values such as equality, justice, and tolerance. Moreover, inclusion ensures that biases and stereotypes are removed from the curriculum, encouraging diversity and intercultural understanding. This aligns with the broader political ideals of social inclusion, fostering active citizenship and ethical responsibility (Felder, 2018). According to Lama (2018), inclusive classrooms embrace diversity and create a supportive environment where each student feels valued, secure, and has a strong sense of belonging. These settings contribute uniquely to students' personal and social development by fostering acceptance and mutual respect among peers.

NEP 2020 promotes an inclusive education system by improving infrastructure and integrating human values like respect, empathy, and tolerance into curricula. It emphasizes equitable quality education for children with special needs, ensuring they receive the same opportunities as other students (Rasool, 2024). Inclusive education, as emphasized in NEP-2020, plays a crucial role in promoting value education by fostering empathy, respect, and social responsibility among students. By prioritizing the inclusion of children with disabilities and ensuring equal participation, schools cultivate an environment of acceptance and equity. The integration of human values such as tolerance, non-violence, and global citizenship within the curriculum helps students develop a deep respect for diversity, eliminating biases and stereotypes. Exposure to various cultures, religions, and identities enhances intercultural understanding and social harmony. Ultimately, inclusive education nurtures a morally conscious generation committed to justice, equality, and coexistence.

Skill education: Professional values play a crucial role within the overall value system, as they significantly impact an individual's career decisions, work ethic, and the broader employment landscape of society (Yi-be, 2015). Vocational training equips individuals with essential skills that hold economic value and create employment opportunities, serving as a strong motivator for fostering self-reliance among adults (Gandhi, 2022). The significance of vocational education encompasses five key dimensions: specialized training, skill development, community service, continuous personal growth, and moral development (Hui-chun, 2010).

Skill education plays a crucial role in fostering critical thinking, innovation, and problem-solving skills, equipping students with the ability to tackle real-world challenges effectively. It promotes entrepreneurship and vocational training, ensuring individuals acquire essential career skills for employability and self-sufficiency. Additionally, skill education strengthens industry-academia collaboration, bridging the gap between theoretical knowledge and practical application, thereby enhancing students' readiness for dynamic professional environments. NEP 2020 emphasizes Outcome-Based Education (OBE) to bridge the gap between theoretical knowledge and practical skills. By integrating critical thinking, communication, problem-solving, and digital literacy, OBE ensures multidisciplinary learning and enhances graduate employability. This skill-centric approach equips students for a rapidly evolving global workforce (Seth et al., 2023).

***Teacher education*:** Teachers play a crucial role in society as nation builders, mentors, and guides. However, in the modern era, various factors have contributed to the decline in their status, reduced teaching effectiveness, and a deterioration in educational values (Maity, Hazra, & Giri, 2019). Teachers serve as role models and mentors, instilling moral values not only through instruction but also by exemplifying ethical behaviour. By cultivating a classroom environment of trust, respect, and integrity, they guide students toward becoming responsible, empathetic, and socially aware individuals (Majumder, 2024). The National Education Policy (NEP) 2020 underscores the critical role of teacher education in ensuring quality education and value-based learning. A multidisciplinary approach, integrating philosophy, sociology, and psychology, enhances teachers' conceptual depth. By equipping

educators with ethical, cultural, and pedagogical insights, teacher education fosters value education, shaping morally conscious future generations (Farswan, 2024).

Conclusion :-

The reforms introduced under NEP 2020 highlight a visionary approach to embedding value education across all levels of learning. From early childhood to higher education, and across diverse domains such as inclusion, vocational training, and teacher preparation, the policy promotes a values-driven education system. By aligning traditional moral principles with contemporary pedagogical practices, NEP 2020 aims to cultivate a generation of learners who are not only knowledgeable but also ethically conscious and socially responsible. These efforts lay the foundation for a just, inclusive, and progressive society. Value-based education plays a vital role in addressing the moral decline among youth by instilling responsibility through the combined efforts of families, educators, and the broader community. Teachers are instrumental in nurturing ethical leadership aligned with the Sustainable Development Goals (SDGs), promoting integrity, discipline, and civic responsibility (Paul, 2017). The National Education Policy (NEP) 2020 advocates for inclusive, equitable, and ethical learning while fostering environmental awareness and lifelong education (Azmi & Naidu, 2024). It encourages critical thinking, digital competence, and global citizenship to prepare students for societal and global challenges. Emphasizing India's cultural, linguistic, and intellectual heritage strengthens national identity, ethical awareness, and collaboration. This cultural consciousness fosters respect, creativity, and unity. NEP 2020 supports a multidisciplinary and holistic framework that blends moral values with life skills, social participation, and service learning (Kurien & Chandramana, 2020), ensuring the development of well-rounded individuals equipped for contemporary societal demands.

References :-

- Azmi, S. S., & Naidu, V. A. (2024). New Education Policy-2020 – Sustain the values in Education system – Role of Stakeholders. In P. Jayalakshmi & K. Uma Rani (Eds.), *National Education Policy 2020 – Prospects & Challenges*. KY Publications. https://doi.org/10.33329/ISBN/9789392760488-80
- Bhattacharjee, C. (2024). Charting the future: India's National Education Policy 2020 and its impact on holistic development. *International Journal of Science and Research (IJSR), 13*(3). https://dx.doi.org/10.21275/SR24313000444
- Carbonilla, I. F., Advincula, R. M. B., Adonis, E. M. G., &Roperez, M. L. M. (2024). Barriers to Practicing Values: Challenges Encountered by Values Education Students in Applying Values Education to Their Everyday Lives. *International Journal of Social Science and Human Research, 7*(6), 3900-3914. https://doi.org/10.47191/ijsshr/v7-i06-45
- Channa, A., Sharma, A., Mishra, S. K., & Bajpai, A. (2022). Impact of NEP 2020 on value education. *IJFANS International Journal of Food and Nutritional Sciences, 11*(8), 3557.
- Farswan, D. S. (2024). *National Education Policy 2020 and teacher education in India*. *Mukt Shabd Journal, XIII*(I). ISSN 2347-3150.
- Felder, F. (2018). The value of inclusion. *Journal of Philosophy of Education*. https://doi.org/10.1111/1467-9752.12280
- Gamage, K. A. A., Dehideniya, D. M. S. C. P. K., & Ekanayake, S. Y. (2021). The role of personal values in learning approaches and student achievements. *Behavioral Sciences, 11*(102). https://doi.org/10.3390/bs11070102
- Gandhi, R. (2022). Significance of New Education Policy (NEP) 2020 for adult education and lifelong learning program. *International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS), 7*(1), 79-95. https://doi.org/10.5281/zenodo.6167835
- Gupta, D., & Srivastava, J. (2024). Role of NEP 2020 in transforming higher education in India and enabling students to compete globally. *International Journal of Creative Research Thoughts, 12*(2). Retrieved from www.ijcrt.org

- Hui-chun, Y. (2010). Diversification and Synthesis: Research on the Value of Vocational Education Development. *Journal of Hunan University of Science & Technology.*
- Kurien, A., & Chandramana, S. B. (2020, November). Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education. *Conference Paper*. https://doi.org/10.6084/m9.figshare.13332413.v1
- Lama, A. (2018). The value of inclusive education in Kosovo. *International Journal of Advanced Research, 6*(12), 846-851. http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/8207
- Maity, A., Hazra, P. K., & Giri, D. (2019). Value education and role of teacher education: A study. *Asian Journal of Educational Research & Technology, 9*(2), 70-72. http://www.tspmt.com
- Majumder, C. (2024). Importance of value education. *The Academic, 2*(11), 172. https://doi.org/10.5281/zenodo.14294641
- National Education Policy 2020, Ministry of Human Resource Development, Government of India. Retrieved from https://www.education.gov.in/national-education-policy
- Peters, R. S. (1982). *Moral education* (Downey & Kelly, Eds.). London: Harper and Row.
- Paul, S. (2017). Value Orientation in Higher Education: Problems and Prospects from Sustainable Development Perspectives. *International Journal of Social Science, 6*(1), 31-38. https://doi.org/10.5958/2321-5771.2017.00004.7
- Pramanik, S. (2018). Value education in school: A step-by-step journey. *International Research Journal of Humanities, Language and Literature, 5*(8). Retrieved from www.aarf.asia
- Rasool, S., & Rasool, S. (2024). NEP 2020 and inclusive education in India. *International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology, 12*(1), 340. https://www.ijraset.com
- Radha, P. (2016). Role of teachers in imparting value education. *National Conference on Value Education Through Teacher Education, 1.International Journal of Advanced Research and Innovative Ideas in Education (IJARIIE).*
- Saroja, R. T. (2016). Role of colleges in imparting value education. *International Journal of Advanced Research and Innovative Ideas in Education (IJARIIE), 1*(2), 6. National Conference on "Value Education Through Teacher Education." Retrieved from www.ijariie.com
- Seth, S., Lowe, D., & Galhotra, B. (2023). NEP 2020: Transitioning towards a skill-centric education system. *International Journal of Research Publication and Reviews, 4*(9), 1708-1710. Retrieved from www.ijrpr.com
- Shelake, S. S. (2022). The value of human values in National Education Policy-2020. In *Implementation of National Education Policy-2020: Challenges and Opportunities for Rural Colleges in India (Vol. I)*. Jaysingpur College. ISBN: 978-93-94819-20-7
- Singh, S. (2023). Value education: Need of the present time. *International Journal of Novel Research and Development, 8*(11), C573. Retrieved from www.ijnrd.org
- Yi-be, Z. (2015). On countermeasures of student vocational values education in higher vocational colleges. *Journal of Liaoning Higher Vocational.*

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 14 August, 2025 **ISSUE- 21**

उपनिषदों में वर्णित शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

***श्रीमती मेघा अरोरा**
****आचार्य जयप्रकाश शर्मा**

शोधसार

प्रस्तुत शोध पत्र में उपनिषद्ों में वर्णित शिक्षा की महत्ता को वर्तमान में परिलक्षित करते हुए उपनिषदों के ज्ञान का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें शोध की वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र में शिक्षा की महत्ता, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, कर्म प्रधान शिक्षा का उल्लेख करते हुए, बताया गया है कि हमारे देश की सभी शिक्षा नीतियों में जिस प्रकार की शिक्षा का उल्लेख किया गया है उसका मूल स्वरूप हमारे उपनिषदों में भी स्पष्ट है, साथ ही प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से वर्तमान पीढ़ी को हमारे ऋषि मुनियों द्वारा लिखित ग्रन्थों से परिचित कराने तथा उनमें उन मूल्य और आदर्शों को विकसित करने पर भी बल दिया गया है।

प्रस्तावना :– वेद संसार के प्राचीनतम् ग्रन्थ हैं और भारतीय दर्शन के मूलाधार हैं। वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का मूलाधार वेद और उपनिषद् हैं। वर्तमान में शिक्षा में जिन सिद्धान्त एवं मूल्यों का वर्णन मिलता है, उसका उद्भव हमारे उपनिषदों में भी वर्णित है। हमारे उपनिषदों में शिक्षा के स्वरूप, गुरु शिष्य सम्बन्ध, शिक्षा का आशय, इन सभी का उल्लेख मिलता है। शिष्य का गुरु के प्रति कर्तव्य एवं गुरु का शिष्य के प्रति कर्त्तव्य वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ही नहीं वरन् उपनिषदों में भी वर्णित है।

वैदिक काल में वर्ण आधारित शिक्षा व्यवस्था संचालित थी, लेकिन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था वर्ण को प्रधान नहीं मानती अपितु कर्म पर बल देती है। अत्रिसंहिता, श्लोकः140, में भी कहा गया है–

"जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते।
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते।।"

ब्राह्मणकुल में उत्पन्न होने वाला जन्म से ही 'ब्राह्मण' कहलाता है। उपनयन संस्कार हो जाने पर द्विजश्रेष्ठ कहलाता है। विद्या प्राप्त कर लेने पर 'विप्र' कहलाता है। इन तीनों नामों से युक्त हुआ ब्राह्मण 'श्रोत्रिय' कहा जाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकताः– आज वर्तमान समय भौतिकता पर आधारित है। वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिकता कहीं विलुप्त हो गई है और वर्तमान तथा आने वाली पीढ़ी में मूल्यों का अभाव देखने को मिलता है। ऐसे में एक अच्छी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो हमारे वेद एवं उपनिषदों में निहित है। भौतिकता के साथ–साथ जब तक हम अपनी पीढ़ी को अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित नहीं कराएँगे एवं उन्हें इस बात से अवगत नहीं कराएँगे कि हमारे प्राचीन ग्रन्थ में भी शिक्षा का वही स्वरूप है जो वर्तमान शिक्षा नीतियों में है, तब तक राष्ट्र एवं समाज का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है।

*** एम.कॉम., एम.एड., नेट (शिक्षाशास्त्र), असि0 प्रोफेसर, ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़, मो0 न0. 9837751300**

**** एम.ए. संस्कृत, आचार्य, बी.एड., प्रवक्ता, डी.एल.एड. विभाग, ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़ मो.न0 8533803101**

3.अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उपनिषदों में वर्णित ज्ञान का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

2. उपनिषदों में वर्णित ज्ञान का वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

4.**अध्ययन का क्षेत्र :–** प्रस्तुत अध्ययन उपनिषद की शिक्षाप्रद एवं मूल्यों पर आधारित श्लोकों तक सीमित है।

5.**अध्ययन की विधिः–** इस अध्ययन में शोध की वर्णनात्मक विधि को अपनाया गया है, जिसमें उपनिषदों में दिए गए श्लोकों में वर्णित शिक्षा की व्याख्या वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से जोड़ते हुए की गयी है। इस अध्ययन में 108 उपनिषद् ज्ञान खण्ड तथा ब्रह्म विद्या खण्ड, संपादक, वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं0 श्रीराम शर्मा, आचार्य तथा माता भगवती देवी शर्मा में प्रकाशित श्लोक आदि का उपयोग द्वितीयक सामग्री के रूप में किया गया है।

वेद का अर्थ 'बोध' या ज्ञान है। विद्वानों ने संहिता, ब्राह्मण, आराण्यक तथा उपनिषद् इन चारों के संयोग को समग्र वेद कहा है। उपनिषद् को वेद का शीर्ष भाग कहा गया है, क्योंकि यह वेदों का अन्तिम (सर्वश्रेष्ठ) भाग है। भारतीय दर्शन जगत में उपनिषदों को वेदों का अलंकार कहा जाता है। भारतीय दर्शन जगत में 108 उपनिषद् हैं जिन्हें आध्यात्मिक मानसरोवर की संज्ञा दी गई है।

उपनिषद् का भाव– उपनिषद् शब्द में 'उप' और 'नि' उपसर्ग हैं। 'सद' धातु 'गति' के अर्थ में प्रयुक्त होती है। 'गति' शब्द का उपयोग ज्ञान गमन और प्राप्ति इन तीनों संदर्भों में होता है। यहाँ प्राप्ति अर्थ अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसके अध्ययन से प्राणि को ज्ञान की प्राप्ति होती है।

"उप–सामीप्येन, निनितरां, प्राप्नुवन्ति परं ब्रह्म यया विद्यया सा उपनिषद्।"

(108, उपनिषद्, ज्ञान खण्ड, संपादक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ, पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, माता भगवती देवी शर्मा 'भूमिका' पृष्ठ सं0–7)

अर्थात् जिस विद्या के द्वारा परंबह्म का सामीप्य एवं तादात्मय प्राप्त किया जाता है वह 'उपनिषद' है। दूसरे शब्दों में 'उप' +'नि' इन दो उपसर्गों के साथ 'सद्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय के प्रयोग से 'उपनिषद्' शब्द बना है। 'सद्' धातु के तीन अर्थ है 1.विनाश, 2. गति (ज्ञान और प्राप्ति), 3. अवसादन (शिथिल करना) इस आधार पर 'उपनिषद्' का अर्थ हुआ–"जो पाप–ताप का नाश करे, सच्चा ज्ञान प्रदान करे, आत्मा की प्राप्ति कराए, और अज्ञान–अविद्या को शिथिल करे, वह उपनिषद् है।"

वर्तमान शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द द्वारा दी गई उपनिषद् के ज्ञान की आवश्यकता :–

स्वामी विवेकानन्द जी ने उपनिषद् ज्ञान की आवश्यकता को न केवल ब्रह्म प्राप्ति के लिए ही, अपितु दैनिक जीवन के लिए भी उपयोगी बतलाया है। उनका कथन है कि उपनिषदें वह शक्ति प्रदान करती हैं, जिसके द्वारा मनुष्य जीवन संग्राम का धैर्य एवं साहस से मुकाबला करता है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र चाहे वह आध्यात्मिक हो या भौतिक दोनों में उपनिषद् अत्यन्त आवश्यक है।

उपनिषदों के विषय में सन्त विनोबा भावे के विचार–

उपनिषदों की महत्ता के बारे में सन्त विनोबा भावे ने लिखा है– **"हिमालय जैसा पर्वत नहीं और उपनिषदों जैसी कोई पुस्तक नहीं।"** क्योंकि जिस प्रकार हिमालय पर्वत की विशालता की तुलना नहीं की जा सकती ठीक उसी प्रकार उपनिषदों में वर्णित ज्ञान की तुलना करना असंभव है।

8. उपनिषदों का महत्त्व :–

1.आत्म संयमः–उपनिषद् ज्ञान की तलाश और आत्मज्ञान के महत्त्व पर जोर देते हैं–

श्लोक–

स त्वं प्रियान्प्रियरूपाꣳ श्च कामानभिध्यायन्नचिकेतोऽत्यस्त्राक्षीः।।
नैतां सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तो यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः।।
(ज्ञान खण्ड. कठोपनिषद्, द्वि0वल्ली, श्लोक–3)

अर्थात् हे नचिकेता ! सांसारिक भोग विलास के नश्वर साधनों को तुमने विचार पूर्वक त्याग दिया है। भौतिक जगत के जिन मायावी प्रलोभनों में अज्ञानी पुरुष जकड़े रहते हैं, तुम उन बन्धनों में नहीं पड़े।

प्रासंगिकता– इस श्लोक में सांसारिक भोग विलास के नश्वर साधनों को त्यागकर, भौतिक जगत के मायावी प्रलोभनों के बंधनों से बचने के लिए कहा गया है, तभी हम स्वयं में संयम स्थापित कर भौतिक जगत के प्रलोभनों से स्वयं को बचा कर अपने चरित्र को नाश होने से बचा सकते हैं।

2. **सद्मार्ग की ओर प्रेरितः**– उपनिषद् सत्य की खोज बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं–

श्लोक–

अगे नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि–विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।। 8।।
(ज्ञान खण्ड, ईशावाश्योपनिषद् श्लोक–18)

अर्थात् हे अग्ने (यज्ञ प्रभु) ! आप हमें श्रेष्ठ मार्ग से ऐश्वर्य की ओर ले चलें। हे विश्व के अधिष्ठातादेव! आप कर्म मार्गों के श्रेष्ठ ज्ञाता हैं। हमें कुटिल पाप कर्मों से बचाएँ। हम पुनः–पुनः (भूयिष्ठ) नमन करते हुए आप से विनय करते हैं।

प्रासंगिकताः– प्रस्तुत श्लोक में श्रेष्ठ मार्ग से ऐश्वर्य की ओर चलने को कहा गया है। श्लोक के माध्यम से कर्मों के द्वारा सद्मार्गों पर चलकर, सत्य की खोज करने एवं, कुटिल पाप कर्मों से बचने के लिए कहा गया है।

3. **दक्षिणा के स्वरूप का ज्ञान :–** यज्ञ करने वाले पुरोहितों को दिये गए दान को दक्षिणा कहते हैं। ब्रह्मसूत्रों में इसका विधान वर्णित है। प्रत्येक धार्मिक या माङ्गलिक कार्य की समाप्ति पर पुरोहितों, ऋृत्विजों को दक्षिणा देना आवश्यक समझा जाता था। इसके बिना शुभ कार्य का सुफल नहीं मिल पाता। श्रुति के अनुसार दक्षिणादाता स्वर्ग में उच्चस्थ पदों पर प्रतिष्ठित होते हैं। तभी दक्षिणा देता है–

श्लोक–

"कस्मिन्नु यज्ञः प्रतिष्ठत इति दक्षिणायामिति कस्मिन्नु
दक्षिणा प्रतिष्ठित इति श्रद्धायामिति यदा ह्येव श्रद्धत्तेऽथ दक्षिणां ददाति।
(ज्ञान खण्ड, बृहदारण्यकोपनिषद्, पृष्ठ सं0–452)

याज्ञवल्क्य और शाकल्य संवाद में वर्णित है कि यज्ञ किसमें प्रतिष्ठित है? दक्षिणा में। दक्षिणा किसमें प्रतिष्ठित् है? श्रद्धा में, क्योंकि पुरुष में जब श्रद्धा होती है, तभी दक्षिणा देता है।

प्रासंगिकताः– वर्तमान समय में जो दक्षिणा शिष्य के द्वारा गुरू को दी जाती है वह तभी महत्त्व रखती है जब उसे देने में श्रद्धा का भाव हो, क्योंकि बिना श्रद्धा से दी जाने वाली दक्षिणा से फल की प्राप्ति नहीं होती।

उपनिषद के ज्ञान का शिक्षा के परिपेक्ष्य में उद्देश्य :–

1.कर्म प्रधान शिक्षा– उपनिषदों में वर्ण की अपेक्षा कर्म को महत्त्व दिया है।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।
स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

(ब्रह्मविद्या खण्ड, अथर्वशिर, उपनिषद् शान्तिः पाठ)

हे देव ! हम कानों से कल्याणकारी बाते सुनें, आँखों से कल्याणकारी (दृश्य) देखें, हम हष्ट–पुष्ट अंगों और शरीर से ईश्वर द्वारा प्रदत्त पूरी आयु देवहित कार्यों में बिताएँ। महान कीर्ती सम्पन्न देवराज इन्द्र हमारा कल्याण करें। सर्वज्ञाता पूषा देवता हमारा कल्याण करें। अरिष्टनेमि (जिसकी गति अवरूद्ध न की जा सके) तथा बृहस्पतिदेव हमारा कल्याण करें। त्रिविध तापों की शान्ति हो।

प्रासंगिकता :– प्रस्तुत श्लोक में कल्याणकारी बातें सुनने, कल्याणकारी देखने के लिए कहा गया है और ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हम अपनी पूरी आयु देवहित कार्यों में ही लगाएँ। हमारे द्वारा किसी का अहित ना हो और ना ही कोई हमारी वजह से दुःख का भोक्ता बने।

2. अहं से मुक्तिः– उपनिषद् में वर्णित ज्ञान हमें अहंकार से मुक्ति की ओर ले जाता है।

अहंकारग्रहान्मुक्तःस्वरूपमुपपद्यते। चन्द्रवद्विमलः पूर्णः सदानन्दः स्वयंप्रभः।।

(ब्रह्मविद्या खण्ड, अध्यात्मोपनिषद्, श्लोक–11)

अर्थात् अहंकार से मुक्त हुआ पुरुष आत्मस्वरूप को प्राप्त करता है। वह चन्द्रमा के समान विमल होकर पूर्ण सदानन्द और स्वप्रकाश बनता है।

प्रासंगिकता– जब तक हमारे अन्दर से अहंकाररूपी अंधकार समाप्त नहीं होगा, तब तक हमारे अन्दर से सदाचरणरूपी प्रकाश प्रस्फुटित नहीं होगा। अतः हमें अज्ञानरूपी अंधकार का त्याग कर ज्ञानरूपी प्रकाश को ग्रहण करना चाहिए, जिससे हमें अहंकार से मुक्ति प्राप्त होगी।

3. **बौद्धिक विकास–** उपनिषद में उसी व्यक्ति को विवकेशील माना जाता है, जिन्हें अपने मन एवं इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण होता है–

यस्तु विज्ञानवान्भवति युक्तेन मनसा सदा।

तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः।।

(ज्ञान खण्ड, कठोपनिषद्, अ01,वल्ली3, श्लोक–6)

अर्थात् जो विवेकशील बुद्धि वाले तथा नियन्त्रित मन वाले हैं, उनकी इन्द्रियाँ उसी प्रकार नियन्त्रित रहती हैं, जिस प्रकार श्रेष्ठ सारथि के वश में अच्छे घोड़े।

प्रासंगिकता– क्योंकि सारथि अनियन्त्रित होगा तो घोड़े भी अनियंत्रित होंगे और यदि सारथि नियत्रित होगा तो घोड़े भी नियन्त्रित होंगे। ठीक उसी प्रकार यदि हमारी इन्द्रियाँ नियन्त्रित होंगी तो हमारा मन भी नियन्त्रित होगा और यदि हमारी इन्द्रियाँ अनियन्त्रित होगी तो हमारा मन भी चंचल हो जायेगा।

4. आध्यात्मिक ज्ञान का विकास :– उपनिषद् हमें भौतिक ज्ञान के साथ–साथ आध्यात्मिक ज्ञान के विकास पर भी बल देते है–

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गंनि वाक् प्राणश्चचुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

(ब्रह्मविद्या खण्ड, आरुण्युपनिषद्, शान्तिपाठः)

मेरे समस्त अंग अवयव वृद्धि को प्राप्त करें। वाणी, प्राण, नेत्र, कान, बल, एवं सभी इन्द्रियाँ विकसित हो। समस्त उपनिषद् ब्रह्मा हैं। मुझसे ब्रह्मा का त्याग न हो तथा ब्रह्मा हमारा परित्याग न करे, मेरा परित्याग न हो–न हो। इस प्रकार ब्रह्मा में निरत (लगे हुए) हमें उपनिषद् –प्रतिपादित धर्म की प्राप्ति हो। हमारे त्रिविध तापों का शमन हो तथा हमें शान्ति प्राप्त हो।

प्रासंगिकताः– प्रस्तुत श्लोक में वाणी, प्राण नेत्र, कान, बल एवं सभी इन्द्रियों के विकास पर बल दिया गया है और ईश्वर से प्रार्थना की है कि मुझसे ब्रह्मा का त्याग न हो तथा ईश्वर हमारा परित्याग न करें। इस प्रकार उपनिषद हमें धर्म की ओर उन्नत करने पर बल देते हुए, स्वयं को त्रिविधि तापों से बचने एवं शान्ति प्राप्त करने की सीख देते हैं।

नैतिकता एवं सत्कार संस्कार का विकास :– उपनिषद नैतिक मूल्यों के विकास एवं वर्तमान पीढ़ी में अतिथि सत्कार की भावना के विकास पर बल देते हैं।

श्लोक–

आशाप्रतीक्षे सङ्गतꣳ सुनृतां चेष्टापूर्ते पुत्रपशूꣳ श्च सर्वान्।

एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे।।

(ज्ञान खण्ड, कठोपनिषद्,अ0 1, वल्ली.1, श्लोक–8)

अर्थात् जिनके घर में ब्रह्मण–अतिथि भोजन किए बिना निवास करता है, उस मन्दबुद्धि पुरुष की आशा (अज्ञात इष्टार्थ की प्राप्ति अभिलाषा), प्रतीक्षा (निश्चित इष्टार्थ की प्राप्ति की प्रतीक्षा) को, उनके संयोग से उपलब्ध होने वाले फल को, कूपादि निर्माणजन्य फल को तथा समस्त पुत्र और पशु आदि को (आतिथ्य सत्त्कार से रहित) अतिथि नष्ट कर देता है।

प्रासंगिकता :– प्रस्तुत श्लोक में नैतिक मूल्यों एवं अतिथि सत्कार की गरिमा का वर्णन करते हुए बताया गया है कि जिसके घर में अतिथि बिना भोजन के निवास करता है उसे मन्दबुद्धि पुरुष की आशा को, उसकी उपलब्धियों को, आतिथ्य सत्कार से रहित अतिथि नष्ट कर देता है। अतः अतिथियों को ईश्वर का साक्षात् रूप मानकर उनका अतिथि सत्कार करना, हमारे भीतर नैतिकता एवं आदर्श मूल्यों का संचार करता है।

पाठ्यक्रम :– उपनिषद् का प्रमुख विषय ब्रह्म का निरूपण होने से इन्हें ब्रह्मविद्या भी कहा गया है। उपनिषद् में दो प्रकार की विद्याओं का उल्लेख है – 1 परा 2 अपरा

1 परा विद्या :– परा विद्या ब्रह्मविद्या है जिसका प्रमुख प्रतिपाद्य विषय ब्रह्म है।

2 अपरा विद्याः– इसके अन्तर्गत संहिताओं, ब्राह्मणों तथा **वेदांगों** का विवेचन दृष्टिगोचर होता है। उपनिषदों को कालक्रम के आधार पर दो भागों में विभाजित किया है–

1. प्राचीन उपनिषद्
2 परवर्त्ती उपनिषद्

प्राचीन उपनिषद् वैदिक शाखाओं पर आधारित है और परवर्त्ती उपनिषद् मध्ययुग के धार्मिक सम्प्रदाओं की देन है।

प्रासंगिकता :– वर्तमान शिक्षा का पाठ्यक्रम भी बालक को आध्यात्मिकता के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ने पर बल देता है। हमारे उपनिषद् भी वेदों के साथ धार्मिक **कर्मकाण्ड** पर बल देते थे।

शिक्षण विधि :– उपनिषदों में स्व अभ्यास के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने पर बल दिया गया है–

शास्त्राण्यधीत्य मेधावी अभ्यस्त च पुनः पुनः ।

परम ब्रह्म विज्ञाय उल्कावत्तान्यथोत्सृजेत् ।।

(ज्ञानखण्ड,अमृतनादोपनिषद्, श्लोक–1)

अर्थात् परम ज्ञानवान मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह शास्त्रादि का अध्ययन करके बारम्बार उनका अभ्यास करते हुए ब्रह्मविद्या की प्राप्ति करे। विद्युत् की कान्ति के समान क्षणभंगुर इस जीवन को (आलस्यप्रमाद में) नष्ट न करें।

प्रासंगिकता :– वर्तमान शिक्षा भी विद्यार्थियों को स्व अभ्यास पर बल देती है। जब हम किसी भी ज्ञान को स्वयं करके नहीं सीखते तब तक हमारा ज्ञान अधूरा रहता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी करके सीखने पर बल दिया गया है।

गुरु शिष्य सम्बन्ध :– गायत्री मंत्र का उपदेष्टा गुरु कहलाता है। अध्यात्म विद्या या ब्रह्म विद्या प्रदान करने वाले आचार्य भी गुरु कहलाते हैं। गुरु जिस पुरूष को गायत्री या अन्य मन्त्र की दीक्षा देता है वह शिष्य कहलाते हैं। जिसका कोई गुरु नहीं होता था उसे 'निगुरा' कहकर तिरस्कृत किया जाता था।

गुरुरगिर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।
पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वेषामतिथिर्गुरुः ।

(ज्ञानखण्ड, पृष्ठ सं0 445)

माता–पिता पहले गुरु हैं, फिर पुराहित आदि। युक्तिकल्पतरु में अच्छे गुरु के अनेक लक्षण वर्णित हैं। चाणक्य नीति के अनुसार द्विजातियों के गुरु अग्नि, वर्णों के गुरु ब्राह्मण, स्त्रियों के गुरु पति और अतिथि सबके गुरु हैं।

गुरु ग्रन्थ साहिब के अनुसार चाहे सौ चाँद चढ़ आए, चाहे सहस्त्र सूर्यों का उदय हो जाए, तो भी गुरु के बिना अँधेरा ही रहता है।

ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
ॐ शान्ति : शान्ति : शान्तिः ।।

(ब्रह्मविद्या खण्ड, अवधूतोपनिषद्, शान्तिपाठः)

हे परमात्मन् ! आप हम दोनों (गुरु–शिष्य) की साथ–साथ रक्षा करें। हम दोनों का साथ–साथ पालन करें। हम दोनों साथ–साथ शक्ति अर्जित करें। हम दोनों की पढ़ी हुई विद्या तेजस्वी हो। हम दोनों एक दूसरे के प्रति कभी ईर्ष्या–द्वेष न करें। हे शक्ति सम्पन्न ! हमारे त्रिविध (आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक) तापों का शमन हो, अक्षय शान्ति की प्राप्ति हो।

प्रासंगिकताः– वर्तमान समय में गुरु–शिष्य सम्बन्ध जिस प्रकार अमर्यादित हो रहे हैं, उसको देखते हुए उपनिषद् में दिए हुए गुरु–शिष्य सम्बन्ध का अनुकरण करके मूल्यों में बढ़ते हुए गिरावट को कम किया जा सकता है, जिससे गुरु–शिष्य सम्बन्ध की गरिमा को बनाए रखा जा सकता है।

शिक्षा प्राप्ति के साधन :– उपनिषद् में शिक्षा प्राप्ति के तीन साधन बताए गए हैं–

1. श्रवण
2. मनन
3. निदिध्यासन

श्रवणं तु गुरोः पूर्वं मननं तदनन्तरम् ।
निदिध्यासनमित्येतत् पूर्णबोधस्य कारणम् ।।
(ज्ञान खण्ड, शिवसंकल्पोनिषद्, श्लोक–43)

अर्थात् शिष्य (साधक) को पूर्ण बोध तभी हो सकता है, जब वह प्रथम गुरु के द्वारा उपदेश सुने, फिर मनन करे, तद्नन्तर निदिध्यासन (यानि धारण) करे।

प्रासंगिकताः– वर्तमान शिक्षा भौतिकवाद एवं व्यावहारिकता पर आधारित है – पहले किसी भी ज्ञान को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए फिर उसके विषय में विचार–विमर्श करना चाहिए तदुपरांत उसको अपने व्यवहार में ढालना चाहिए। तभी वास्तव में सच्चे ज्ञान की प्राप्ति होती है। वही साधन उपनिषद् में बताए गए हैं।

निष्कर्ष :–

1. उपनिषद् ज्ञान के भण्डार है जिसकी झलक वर्तमान शिक्षा में भी देखने को मिलती है।
2. दुःख से छुटकारा पाने के लिए कर्म की प्रधानता को स्वीकार किया गया है।
3. ज्ञान प्राप्ति के तीन साधन (श्रवण, मनन, निदिध्यासन) का उपनिषदों में भी उल्लेख है और वर्तमान शिक्षा का भी आधार है।
4. गुरु व शिष्य के मध्य सीधा मधुर व एक दूसरे के प्रति समर्पित सम्बन्ध पर बल दिया गया है।
5. पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के समावेश पर बल दिया गया है।
6. स्व अभ्यास एवं करके सीखने पर बल दिया गया है।
7. चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास पर बल दिया गया है।
8. वर्ण प्रधान शिक्षा के स्थान पर कर्म प्रधान शिक्षा पर बल दिया है।
9. व्यक्ति वर्ण से नहीं कर्म से ब्रह्मण होता है।
10. वर्तमान शिक्षा आदर्शवाद के साथ–साथ प्रयोजनवाद एवं यर्थाथवाद के सिद्धान्त पर बल देती है।

सुझावः–

1. उपनिषदों में वर्णित शिक्षा को आधार मानकर नवीन शिक्षा प्रणाली की नींव रखी जा सकती है।
2. वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उपनिषदों से जोड़कर राष्ट्र एवं समाज के विकास में योगदान दिया जा सकता है।
3. विद्यार्थियों में हो रहे मूल्यों के पतन को रोका जा सकता है।
4. गुरु – शिष्य सम्बन्धों की गरिमा को बनाए रखा जा सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. 108 उपनिषद्, ज्ञान खण्ड तथा ब्रह्म विद्या खण्ड, संपादक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं0 श्रीराम शर्मा, आचार्य माता भगवती देवी शर्मा

Journal